अध्याय 1

कलीसिया में दलबन्दी और झगड़े

यूनानी-रोमन राज्य में जब लोग पत्र लिखते थे, तो वे आरम्भिक शब्दों में अपना परिचय देते थे। साथ ही वे पृष्ठभूमि भी तैयार करते थे कि उनके पत्र का उद्देश्य क्या है। कुछ बातों के द्वारा पौलुस ऐसे आरम्भ करता है जैसे कूची से रंग भरते है। पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखे अपने पत्र के आरंभ में ही एक अधिकार की मुद्रा व उनके लिए प्रेम भरी चिंता, दोनों ही का परिचय दिया। कलीसियाई समाज में, उनके परमेश्वर के साथ संबंध का प्रयोजन उनके इस पूरे वार्तालाप का उद्देश्य पाया जाता है।

कुछ वर्ष पहले पौलुस के पाठको ने यीशु मसीह के विषय में कभी नहीं सुना था; अतः "परमेश्वर की कलीसिया" का उनके लिए कोई अर्थ नहीं था। अब परिस्थिति बदल गई। अब प्रेरित कलीसिया के साथ पुराने अनुभव के आधार पर मसीहियों की, असफलताओं में उनकी सहायता करने के लिए है। उन्होंने जान लिया है कि मसीह में होने के बावजूद उनकी पाप के लुभाने की स्वतंत्रता का कोई परिणाम नहीं निकला है। कुरिन्थियों के मसीहियों की असफलता के परिणामस्वरूप उनके द्वारा अन्य विश्वासियों को दी जाने वाली सहायता में बाधा हुई। दूसरा उथलपुथल जो कलीसिया में हुआ वह ईश्वरविहीन तथा प्रतिरोधी संसार के दबाव के कारण था।

पौलुस और सोस्थिनेस की ओर से अभिवादन (1:1-3)

[1]पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित होने के लिये बुलाया गया और भाई सोस्थिनेस की ओर से, [2]परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं; और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं। [3]हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे।

आयत 1. पौलुस अपने अधिकतर पत्रों का आरंभ अपने परिचय में अपने को प्रेरित होने के लिए बुलाया गया, परिचय देता है। फिलिप्पियों, थिस्सलुनीकियों की दोनों पत्रियों तथा फिलेमोन इसके अपवाद हैं। मित्रो को लिखी गई पत्री में इस प्रकार का प्रेरितीय अधिकार में औपचारिक संबोधन अप्रत्याशित लगता है; इसे अपमान के रूप में भी लिया जा सकता है। आधुनिक संसार में, एक व्यक्ति

जो परास्नातक उपाधि अथवा दार्शनिकता की परास्नातक उपाधि रखता हो, अपने पहले नाम से संबोधित हो - जवानो के द्वारा भी - जब वह कलीसिया में मिलने जाए। मित्रों में सामान्यतः उपाधियों का प्रयोग नहीं होता जब वे आपस में बात करते हैं। अपने आपको "एक प्रेरित" के रूप में परिचित कराते हुए पौलुस अपने और अपने पाठको के बीच कुछ दूरी बनाए रखता है। वह उनका मित्र था; परन्तु, एक अच्छे अभिभावक की तरह, वह मित्र से बढ़कर था। मित्रता को एक ओर रखकर, वे इस बात को भूले की वह **यीशु मसीह का** प्रेरित है।

पौलुस 1 कुरिन्थियों में अपने प्रेरितीय अधिकार का बचाव प्रदशित नहीं होता है; उससे और उसके पाठको से इस बात की अपेक्षा है कि वह एक आत्मिक संचालन का अभ्यास करेगा। प्रेरिताई वह मंच था जिसके द्वारा उसने कुरिन्थियों की कलीसिया की आवश्यकताओं के विषय में लिखा,[1] परन्तु साथ ही यह वह ऊर्जा भी थी जिसने उसे मसीह के संदेश को संसार तक लाने के लिए उसे बाध्य किया। उन सभी चिह्नों में जो उसे प्रेरित होने का प्रमाण देते हैं, पौलुस इस बात की अपील करता है कि उसने प्रभु को देखा है (9:1; 15:8); परन्तु उसका दावा कुछ और बातों पर भी बनता है। उसको कार्य करने के लिए परमेश्वर के द्वारा रचा और स्वयं बुलाया गया है (गला. 1:15) और पवित्र आत्मा की उपस्थिति के द्वारा प्रमाणित किया गया है (1 कुरि. 7:40; गला. 3:2)। कुरिन्थियों को विशेष रूप से, पौलुस की प्रेरिताई स्पष्ट थी। वह वही था, जिसने उन्हें मसीह का मार्ग दिखाया और उसने ही उनके लिये पवित्र आत्मा की आशीषों को अर्पित किया था (2 कुरि. 3:2, 3)।

पौलुस के परिचयात्मक शब्दो से ही उसके पाठकों को पता चलता है कि वह प्रेरिताई की उपाधि को वहन करने के लिए तैयार है। वे उससे यह आशा कर सकते हैं कि वह प्रभु के साथ, किसी भी तरह के ईश्वरहीन व्यवहार और मसीही अंगीकार के विरूद्ध प्रहार करने के लिए तैयार है। यह पत्र एक सामान्य मित्रता भरे पत्र से कहीं बढ़कर है। यहां तक कि वह अपने सहयोगियों, तीमुथियुस और तीतुस के लिए भी "प्रेरित" के रूप में पाया जाता है। हांलाकि यह पत्र व्यक्तिगत मित्रों को लिखा गया, पौलुस यह आशा करता है कि उसके निर्देश व चेतावनियाँ साधारण प्रचारकों के लिए भी हो।

पौलुस के अभिवादन में **सोस्थिनेस** जुड़ा है। रोमियों, गलातियों, इफ़िसियों, तीमुथियुस को दोनों पत्रों व तीतुस को पत्र में पौलुस अकेले ही भाइयों को अभिवादन करता है। 2 कुरिन्थियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन में अभिवादन में तीमुथियुस का नाम जुड़ा है। थिस्सलुनीकियों को दोनों पत्रों में, सिलास व तीमुथियुस दोनों का प्रेरित के साथ होना माना जाता है। केवल 1 कुरिन्थियों में पौलुस के साथ सोस्थिनेस जुड़ा है।

"सोस्थिनेस" युनानी में भी एक दुर्लभ नाम है। नए नियम में यह केवल यहाँ और प्रेरितों के काम 18:17 में मिलता है। एक सवाल अपने आप से उठता है: क्या सोस्थिनेस जो कुरिन्थियों को अभिववादन कर रहा है वही है "जो आराधनालय का सरदार [केजेवी के अनुसार मुख्य शासक]" था, जिसे कुरिन्थिस

में सब लोगों ने पकड़ के गल्लियो के न्याय आसन के सामने प्रेरितों के काम 18:17 में मारा था? यदि ऐसा है तो कुरिन्थिस का सोस्थिनेस इफ़िसुस में क्या कर रहा था? वह कुरिन्थिस से इफ़िसुस में दूत बनकर पौलुस के पास कलीसिया के सवाल लेकर नहीं आया था। कम से कम, प्रेरित ने उसके विषय में कुरिन्थिस से पत्र लेकर आए लोगों का कोई वर्णन नहीं किया है (1 कुरि. 16:17)। आगे भी पत्र में उसका कोई प्रसंग नहीं मिलता है। शायद यह वही व्यक्ति न हो; परन्तु हम यह सवाल उठा सकते हैं कि इफ़िसुस के इतने मसीहियों में से केवल उसका ही नाम अभिवादन में सम्मिलित क्यों किया गया है।

हम यह मान लेते हैं कि अज्ञात कारणों सें कुरिन्थिस का सोस्थिनेस (प्रेरितों. 18:17) इफ़िसुस में प्रवासित हो गया था। वह शीघ्र ही कुरिन्थुस के यहूदी समाज में प्रभावशाली हो गया था। जब क्रिसपुस ने जो पहले आराधनालय का सरदार था, प्रभु का अंगीकार किया था, और शहर के यहूदियों का कोई अगुवा न था (प्रेरितों 18:8), सोस्थिनेस आगे आया। हो सकता है,यह वही है जिसने रोमी न्यायालय के सामने यह प्रस्ताव रखा था कि यहूदी मसीहियों के साथ स्पष्ट रुप से संबंध तोड़ लें। वह चाहता था कि अधिकारी मसीहियों को, यहूदी न समझें, अपितु दंगा करने वाले समझें जो संसार में ऊथल पुथल मचाते है। और उन्हें रोमी राज्य द्वारा यहूदियों को प्राप्त अधिकारों की भांति कोई स्तर अथवा सुरक्षा नहीं मिलनी चाहिए। उसकी निगााहों में, मसीही लोग यहूदियों व यूनानियों को यह विश्वास दिलाना चाहते थे कि "नियम के विरूद्ध परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए" (प्रेरितों. 18:13)। सोस्थिनेस ने, इस सार में घोषणा की, "हम उनका इनकार करते हैं। वे हम में से नहीं हैं। तुम रोमी जैसा चाहो उनके साथ व्यवहार कर सकते हो, जैसे तुम किसी अन्य अज्ञान धर्म के सदस्य हो।"

गल्लियो के सामने वैसा नहीं हुआ जैसा सोस्थिनेस चाहता था। इस कारण प्रेरितों के काम में स्पष्ट नहीं है, जो वहां खड़े थे, उन्होंने न्याय आसन के समाप्त होने पर उस आराधनालय के सरदार को मारा, संभवतः बेरहमी से। उसको यह मार न्याय आसन की उपेक्षित आँखों के सामने पड़ी। उसके इस संदर्भ के निर्णय पर, निश्चय ही गल्लियो ने रोमियों के सामने वैध पूर्व दृष्टांत दिया होगा, जो, आने वाले वर्षों में यहूदियों और मसीहियों को परमेश्वर के आराधक के रूप में जाना गया। हांलाकि प्रेरितों के काम 18:17 कहता है, "परन्तु गल्लियो ने इन बातों की कुछ भी चिन्ता न की।"

गल्लियो के समक्ष निर्णायक पिटाई के बाद, संभवत सोस्थिनेस ने कुरिन्थुस में अपने लिए आदर खो दिया हो। इसी कारण से वह इफ़िसुस आ गया हो। इफ़िसुस में संभवतः उसके अपने प्रयासों से वह पौलुस से मिला होगा। उसने प्रेरित को सुना होगा और वह भी क्रिसपुस की राह पर चला। सोस्थिनेस ने मसीह को प्रभु ग्रहण किया और कुरिन्थिस के आराधनालय का दूसरा सरदार बना जिसने विश्वास के मसीही संदेश का अंगीकार किया।

सोस्थिनेस पौलुस के साथ अभिवाददन में जुड़ता है, परन्तु यह स्पष्ट है कि 1 कुरिन्थियों पत्र के मूल लेखन में उसका कोई भी योगदान नहीं है। उन दोनों के

एक साथ नाम आने का स्पष्ट कारण है कि कुरिन्थियों के मसीहियों को यह चिह्न मिले की वे दोनों एक विजयी आंदोलन का नेतृत्व कर रहें हैं (पढ़ें रोमि. 1:8-10; कुलु 1:6; 1 पतरस की पहली पत्री 5:9)। कोई भी विरोध परमेश्वर की योजना के आगे नहीं ठहर सकता। उसके उद्देश्य पूरे होते हैं। पौलुस सोस्थिनेस के नाम के आगे **हमारे भाई** इसलिए लिखता है क्योंकि कुरिन्थियों ने अपने पुराने शत्रु से अभिवादन की आशा नहीं की होगी। उसका परिवर्तन एक स्वागत करने योग्य अचरज की बात है।

आयत 2. पौलुस यह पत्र **परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थ है** लिख रहा है। शब्द "कलीसिया" LXX[2] से लिया गया है। लौकिक संसार में, यह एक साधारण शब्द था जो शहर की सभा के लिए प्रयोग होता था जहां नागरिक राज्य के कार्यों का निर्णय लिया करते थे (पढ़ें प्रेरितों 19:39)। यूनानी पाठको को सभा शब्द के विचार में भेद करने में कठिनाई होती होगी। जब पौलुस "कलीसिया" का प्रयोग विश्वासियों के लिए करता है, तो इस विचार के साथ करता है कि मसीही एक साथ मिलते हैं। कलीसिया ने कुछ भी किया हो अथवा रही हो, यह इकट्ठी हुई। सामुदायिक जीवन एक दूसरे से मिलने के द्वारा समर्थित होता है। मसीही परमेश्वर की उपस्थिति में एकत्र होकर उसकी प्रशंसा करते थे। वे एकत्र होकर एक दूसरे को एक साझे विश्वास में एक साथ होने में और वे एक साझे जीवन को अपनाने के लिए सहयोग, पुनः पुष्टि, और उत्साह प्रदान करते थे (इब्रा. 10:23-25)।

प्रेरित यह बात जानता था कि उसके पाठको के विश्वास का व्यवसाय और उनका व्यवहार, उनके स्वयं के बारे में विचार के साथ सशर्त होगा। वे "परमेश्वर की कलीसिया" थे, जो पौलुस की ही भांति **मसीह में पवित्र किये गए थे**। वे इसलिए पवित्र किए गए क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अपना नाम धारण करने के लिए बुलाया था। "पवित्रीकरण केवल एक धारण किए गए विशेष नैतिक गुण में ही सीमित नहीं रहता अपितु परमेंश्वर के साथ एक विशेष संबंध में निहित होता है।"[3] पवित्र किया जाना, पावन होना है। पौलुस द्वारा इस शब्द का प्रयोग वर्णनात्मक से अधिक है। वह इन मसीहियों को चुनौती दे रहा है कि परमेश्वर ने उनको जिस प्रकार रचा है वही रहे। उनका जीवन उस पवित्रता को प्रदशित करे जो इस संसार में होने की घोषणा तो करती है पर इसकी है नहीं। वैसे भी, पौलुस के इस पत्र के शब्दो में हम मसीह की देह में एकता आरंभ से ही पाते हैं। कुरिन्थ की कलीसिया में दलबन्दी, उस देह का अपमान है, जो वे बनना चाहते थे।

1 कुरिन्थियों में जिन समस्याओं एवं चिंताओं को संबोधित किया गया है वे विशेष रुप से कुरिन्थ की कलीसिया के लिए है, कुरिन्थ के मसीहियो को यह समझनें की आवश्यकता थी कि उनकी सामुदायिक भागीदारी संपूर्ण संसार की सहभागिता से है। भले ही वह कुरिन्थ, इफ़िसुस अथवा अन्य किसी नगर की कलीसिया हो, विश्वासी सभी लोग अपने आप को **सबके साथ हर स्थान में हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से बुलातें है, उनके और हमारे प्रभु के नाम से**। वे प्रभु के

विशाल छुटकारे से निकाले गए और उसमें योगदान देते हैं। कुरिन्थ के मसीहियो को यह समझनें की आवश्यकता थी कि उनका ध्येय उद्धार के सन्देश का परिवेश में जो समय और सीमाओं की सीमितताओं को लांघ चुका है। प्रभ यीशु मसीह, सब स्थानों के विश्वासियों का प्रभु, उनका भी प्रभु था, जैसे वह "हमारा" है।

आयत 3. कुरिन्थियों की कलीसिया के लिए प्रेरित की प्रार्थना और प्रेमभरी शुभ कामना यूनानी पत्रों शब्दों के विशुद्ध अभिवादन में व्यक्त होती है। वह लिखता है, **तुम्हे अनुग्रह और शान्ति** मिलती रहे। इन शब्दो को साधारण नहीं समझना चाहिए, ये मात्र असावधानी से लिखा अभिवादन नहीं है। विश्वास पौलुस और कुरिन्थियों की कलीसिया को एकता में बांधता है। वे एक हैं क्योंकि **हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह** ने उन्हें एक किया है। परमेश्वर की ओर से निर्धारित सीमाओं ने उन्हें अविश्वासियों के उन जन समूहों से पृथक किया है जिनके मध्य में वे निवास करते थे। कुरिन्थियों के मसीही ये जानते थे कि अनुग्रह और शान्ति उनकी है।

परमेश्वर का पितृत्व और यीशु मसीह की प्रभुता पौलुस के लिए मुख्य सिद्धान्त थे। यूनानी साहित्य में ज़ीयुस को कम से कम अवसरों पर दिव्य पिता के रुप में देखा गया था; परन्तु उसका पितृत्व विशाल देवी-देवताओं के सदंर्भ में था न कि मानवीय परिवार के। पुराने नियम में भी परमेश्वर का पितृत्व व्यापक विषय नहीं था, लेकिन वह अनुपस्थित भी नहीं था (पढ़ें होशे 11:1-4)। यीशु और पौलुस दोनों ने पितृत्व को रुपक के प्रयोग करके विश्वासियों को पिता का उसके लोगों के प्रति प्रेम तथा उनकी उसके प्रति दायित्व दोनों को समझाया है। पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह परमेश्वरत्व के समान रुप है। मसीहियों को उनके द्वंद्व और एकता में अनुग्रह और शान्ति मिलती है।

परमेश्वर के द्वारा सब बातों में समृद्धता (1:4-9)

यूनानी रोमी संसार के अंलकारिक विद्यालयों में वक्ताओं और लेखकों को सिखाया जाता था कि संबाधन को ऐसे शब्दों से आरम्भ किया जाए जिनसे उनके और श्रोताओं के मध्य एक सेतु बने। पौलुस जो स्वयं भी एक शिक्षित व्यक्ति था, उसने अपनी सांसारिक शिक्षा में संवाद स्थापित करना सीखा था। सामान्य अभिवादन के बाद पौलुस कुरिन्थियों की कलीसिया को परमेश्वर द्वारा उनको दी गई आशिषों का स्मरण कराता है:

[4]मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर का धन्यवाद सदा करता हूँ, इसलिये कि परमेश्वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीशु में हुआ [5]कि उस में होकर तुम हर बात में, अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए [6]कि मसीह की गवाही तुम में पक्की निकली [7]यहाँ तक कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते हो। [8]वह तुम्हें अन्त तक दृढ भी करेगा कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो।

ष्परमेश्वर सच्चा है, जिसने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है।

ये शब्द पूरक हैं। परमेश्वर ने कुरिन्थियों का चुनाव किया, परन्तु वे अनुग्रह को ग्रहण करने में निष्क्रिय नहीं थे। उन्होंने भी उसके लिए एक निर्णय लिया। जैसे पूरे पत्र में पौलुस करता है, पौलुस अपने पाठकों से अपील करता है कि जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें रचा है वही रहें। वे आशिषित थे, उन्होंने परमेश्वर के पितृत्व और यीशु की प्रभुता और मसीह के लिए अपना निर्णय लेने का काम पूरा नहीं किया था। विश्वासयायेग्यता की यात्रा उनके आगे थी।

आयत 4. पौलुस सामान्यतः अपने पत्रों को धन्यवाद की प्रार्थना से आरंभ करता है। (रोमियों 1:8; इफि. 1:6; फिलेमोन 1:3; कुलु. 1:3; 1 थिस्स. 1:2; 2:13; 2 थिस्स. 1:3)। वह उस अनुग्रह के लिए जो परमेश्वर ने कुरिन्थिस के विश्वासियों पर किया और उनकी विश्वासयोग्य प्रतिक्रिया के लिए भी धन्यवाद देता है। कलीसिया के भीतर ऊथल पुथल को ध्यान में रखते हुए, पौलुस ने ऐसी खास बात लिखी कि **मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर पिता का धन्यवाद सदा करता हूँ**। यहाँ पर प्रार्थना औपचारिकता के साथ समाप्त नहीं होती। परमेश्वर का अनुग्रह **तुम पर मसीह यीशु में हुआ**, यह मनुष्यों की असफलताओं में कार्यकारी था। परमेश्वर कलीसिया में के पापियों को भी, जो परिपक्वता नहीं रखते, सही ठहराते हैं। पौलुस धन्यवादी है कि कुरिन्थ के विश्वासियों ने सुसमाचार का कहना माना और परमेश्वर ने उन्हें बचाए हुओं की देह में रखा। वह इस बात की बिलकुल अनुमति नहीं देना चाहता था कि अज्ञानता और घमंड, जो कुरिन्थ में था, मसीह द्वारा मनुष्यों के छुटकारे के कार्य से उसको विचलित करे।

दो छोटे वाक्यों में (1:3, 4), पौलुस दो बार यूनानी शब्द χάρις (*चारिस*) जिसका अनुवाद अनुग्रह है का प्रयोग करता है। प्रेरित इस शब्द के सामान्य अर्थ पक्ष व सुइच्छा का प्रयोग करते हुए संकोच नही करता (1:3), परन्तु आयत 4 में वह इसके अर्थ को अलग स्तर पर ले जाता है। मसीहियों के लिए "अनुग्रह" का तकनीकि अर्थ है, परमेश्वर की ओर से, अप्रत्याशित, सेंतमेंत और कृपालु उपहार "मसीह में दिया ... गया।" पौलुस की सारी फटकार और सुधार जो पत्र में पाई जाती है उसे पौलुस की उस अनुग्रह के लिए जो वह कुरिन्थ की कलीसिया के भाइयों और बहनों के साथ साझा करता है, धन्यवाद के रुप में पढ़ी जानी चाहिए। जो भी ऊथल पुथल तत्कालीन उन्हें घेरे हुए है, प्रेरित चाहता है कि उसके पाठक यह जाने कि जो भी आत्मिक आशिषें वे मसीह में साझा करतें हैं, वे सब परमेश्वर की ओर से उपहार है। उसे भरोसा था कि जैसे-जैसे वे परमेश्वर के अनुग्रह में बढ़गें, वे दलबन्दी और पाप से परे सोचेंगे जो उनमें आत्मा को बुझा रहे थे।

आयत 5. प्रेरित का संकेत कि **सारा वचन और सारा ज्ञान** उन मसलों का परिचय देता है जो पत्र के खुलने पर बड़े हो जाते है। कुरिन्थ के कुछ विश्वासी प्रत्यक्ष रुप से अपनी बुद्धि के अधिकार पर गर्व करते थे, परन्तु वे बुद्धि को वैसे

नहीं समझते थे जैसे पौलुस ने समझा था (3:18-20)। पौलुस इस बात का धन्यवाद देता है कि उसके पाठक उस में होकर हर बात में, **धनी किए गए**; वे उस सब के भागी हुए जो प्रभु के पास देने के लिए था। पौलुस के लिए यीशु "सारे वचन और सारे ज्ञान" का स्रोत है। प्रेरित एक ही समय में बहुत ही अच्छे से प्रशंसा और फटकार दोनों देता है। कुरिन्थ के लोगों को वचन और ज्ञान में गर्व के द्वारा सांसारिक सदंर्भ में प्रशंसा प्राप्त होती थी, इस कारण पौलुस के शब्द एक कटाक्ष के रूप में प्रतीत होते हैं।

पत्र यह स्पष्ट करता है कि कुरिन्थियों में से कुछ के सुवचन की बढ़ौती अलंकारिक सम्मेलनों में थी। पौलुस जानता था कि अलंकारिक गुण प्रभु के कार्य को पूरा नहीं कर सकते। जबकि कुरिन्थ के लोगों को अपने ज्ञान पर गर्व था, पर पौलुस इससे सहमत नहीं था। मसीह में वे परमेश्वर के विषय में जानने व बोलने के लिए उसके उद्धार, प्रकाशन, और अनन्त जीवन के विषय में आशिषित थे। परमेश्वर को महिमा देने के बदले, कुरिन्थियों ने सुवक्ता वचन और चतुराई से गढ़े खोखले शब्दों को जो उन पर ही समाप्त होते थे, हमेशा से महत्व दिया।

प्रेरित के उपदेश डींग मारने व दलीय तुलना नहीं करते। वह और कुरिन्थ के भाई ज्ञान को और सत्य के संवाद समझते हैं; परन्तु जिन मानदण्डों के आधार पर वह वचन और ज्ञान को देखता है वह उनके समान नहीं हैं। ये भाई संभवतः धनी थे, परन्तु उन्हें अब तक इस बात का बोध नहीं था कि मसीह में साझे उपहार ने उन्हें बुलाया कि वे अपने आसपास के लोगों के व्यवहार को अस्वीकार करें।

आयत 6. कुरिन्थियों को मसीह की जानकारी पौलुस व अन्यों की गवाही के द्वारा मिली। उनका अभिकथन था कि यीशु ने मसीह होने के लिए अपने को वचन और कार्य से दिखलाया (15:1-4)। परमेश्वर ने यीशु नासरी को मृतकों से जीवित करके अपना पुत्र घोषित किया (रोमि.1:4)। प्रेरित वही अपील करता है जो कुरिन्थियों जानते हैः कि **मसीह की गवाही** तुम में **पक्की निकली**। अन्य पक्ष के पाठक पौलुस और उसके प्रथम पाठकों की परिस्थिति से अपरिचित व अचरज में थे कि किस भांति प्रेरितीय गवाही पक्की हुई है। पौलुस दृढ़ता से कहता है, "प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच सब प्रकार के धीरज सहित चिह्नों, ... दिखाए गए।" (2 कुरि. 12:12)। जब पौलुस नगर में था, तो उसके हाथ रखनें के द्वारा कुछ कुरिन्थियों के ऊपर पवित्र आत्मा सामर्थ्य के साथ उतरा। जिन लोगों पर यह आषिश हुई वे अपने विवेक के अनुसार, आश्चर्यकर्म दिखाते थे (1 कुरि. 12:7-10)।

सुसमाचार की शिक्षा आश्चर्यकर्मों के द्वारा भी प्रमाणित हुई, परन्तु पौलुस के विचारों में यहां कुछ अलग बात है। सभंवतः वह संकेत करता है कि जिस प्रकार कुरिन्थ के मसीही, जीवन जी रहे थे और जो अनुभव उन्होंने बचाए जाने के कारण उपभोग किए उसमें बदलाव दिखता था। परिवर्तित जीवनों के द्वारा उसकी शिक्षा की सच्चाई का प्रमाण मिलता है। भले ही यह उतनी ही अच्छी प्रतीत होती है जैसे बाद की व्याख्या पर यह अनिश्चित और संक्षिपत भी हैं। "पक्की निकली" क्रिया का शब्दिक अर्थ है (βεβαιόω, *बेबायोस)* कुरिन्थियों को

लंगडे व्यक्ति की चंगाई और अन्धे व्यक्ति को दृष्टिदान के अनुभवों को स्मरण कराता है। इब्रानियों का लिखने वाला भी इसी क्रिया के शब्दों का उपयोग करते हुए सच्चाई की गवाही के विषय में कहते हुए लिखता है, "और अद्भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ्य के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बाँटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा," (इब्रा. 2:3-4)।

आयत 7. प्रेरित आत्मिक आशिषों को प्रमाणित कर मापने का परिश्रम करता है जो उसके पाठको ने अनुभव की हैं। उन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह में सहभागिता की है और **किसी भी वरदान में उन्हें घटी नहीं है**। वे सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए। मसीह की गवाही उनके मध्य में पक्की निकली। उनकी आशिषों के प्रारुप देखतें हुए, कलीसिया में संकीर्णता, दलबन्दी, असमंजस्य और सांसारिकता कैसे हो सकती है? इससे पहले कि प्रेरित कोई कठोर सवाल उठाये, वह कुरिन्थियों के मध्य में हुए परमेंश्वर के कार्यों का विधिपूर्वक पुष्ट करता हैं। वह यह भी उन्हें बताना चाहता है कि उन्हें मिली आशिषों में कोई भी उन्हें उनकी बुद्धि, सामर्थ्य, अथवा अच्छाई से नहीं मिली है। समय आने पर वह उनसे पूछता है कि वे मनुष्य की बुद्धि और सामर्थ्य पर उनके अकारण अति विश्वास के स्रोत को भी उसे समझायें (1 कुरि. 3:18-20)।

जबकि कुरिन्थियों को "किसी वरदान में घटी नहीं" थी, विभिन्न वरदानों की प्रकृति बहुत चर्चा का विषय रही है। "वरदान" शब्द χάρισμα *(चारिश्मा)* का अनुवाद है, जो पौलुस की पत्रियों में सोलह बार और 1 पतरस 4:10 में एक बार आया है। जब पौलुस रोम में पहुँचा, तो वहाँ के मसीहियों को "कुछ आत्मिक वरदान" प्रदान करने की उसकी आशा थी (रोम. 1:11)। यूनानी भाषा में, यह शब्द 1 कुरिन्थियों 12 में पाँच बार आया है। कुरिन्थ के विश्वासी जिन विभिन्न चमत्कारी वरदानों का आनन्द ले रहे थे, "एक ही आत्मा" (12:4) ने दिया था। इन संदर्भों में यह स्पष्ट है कि चारिश्मा विशेष, अलौकिक दानों को दर्शाती है; परन्तु पौलुस कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग, चमत्कारी के बिना कोई स्पष्ट संदर्भ के किया करता था। उदाहरण के लिये, रोमियों 11:29 कहता है, "क्योंकि परमेश्वर के वरदान और बुलाहट अटल हैं।" फिर भी, दो विचारों से यह सम्भव हो सकता है कि 1 कुरिन्थियों 1:7 में पौलुस का ध्यान अलौकिक वरदानों के प्रति था। सबसे पहले, सन्दर्भ में वह उन आशीषों की पूर्णता के सन्दर्भ में कुरिन्थियों के विश्वास की पुष्टि कर रहा था जो उन्होंने प्राप्त की थी। इस पूर्णता में चमत्कारी वरदान शामिल थे। दूसरा, कुरिन्थियों ने चमत्कारिक (12:29-31) पर गलत दिशा में ज़ोर दिया था। 1:7 में इस समस्या का उल्लेख करते हुए पौलुस की सुधार की आशंका 12:29-31 में की गई है।

कुरिन्थ के मसीहियों को आत्मिक वरदानों में घटी नहीं थी, परन्तु वरदानों को तब महत्व दिया गया जब परमेश्वर की रचना की विस्तृत चित्रण पर विचार किया गया। पौलुस ने अपना परिपेक्ष्य रखा जब हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकाशन के लिये उसने अपने पाठकों का ध्यान आकर्षित किया। एक सूक्ष्म गति के साथ, उसने कुरिन्थियों को स्मरण करवाया कि वे एक समाप्ति की बाट जोह

रहे थे। वरदान और प्रतिष्ठा एक अलग रंग ले लेते हैं जब कोई प्रभु के आगमन की अपेक्षा करता है। कुरिन्थ के विश्वासी जो भी आत्मिक वरदान या ज्ञान का आनन्द लेते थे, मसीह का आगमन, **हमारे प्रभु का प्रकाशन**, उनकी उत्सुक आशा थी। मसीह की कलीसिया हमेशा क्षितिज की दिशा में निर्देशित एक दृष्टि के साथ रहना है, क्योंकि "सब बातों का अन्त निकट है" (1 पतरस 4:7)।

मसीहियों के रूप में, हमारे पास आश्वासन है कि, परमेश्वर के अनुग्रह से हम अन्त तक दृढ़तापूर्वक बने रह सकते हैं; परन्तु दृढ़ता एक अन्तिम निष्कर्ष नहीं है। पौलुस ने बाद में इस सम्भावना पर विचार किया था कि वह आप ही "निकम्मा" ठहर सकता है (1 कुरि. 9:26, 27)। उन लोगों के लिये जो परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं, कोई सांसारिक शक्ति प्रभु के प्रेम से उन्हें अलग नहीं कर सकती (रोम. 8:38, 39)। यीशु हमारे सहायक और मित्र हैं। परमेश्वर क्षमा कर देंगे और उनका निज कहलाने का दावा करेंगे।

आयत 8. 1:7 में "हमारे प्रभु यीशु मसीह का प्रगट होना" 1:8 में **हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन** के बारे में बोलने का एक और तरीका है। इतिहास प्रभु की वापसी, सांसारिक अस्तित्व और समय के अन्त की ओर बढ़ रहा है। जब तक समय का अन्त दुःख के साथ होता है, तब तक मानव परिवार में भ्रम नहीं है। परमेश्वर समय के साथ ही उद्देश्य और दिशा देता है।

"प्रभु का दिन" पुराने नियम में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा इसका प्रयोग, नए नियम में इसका अर्थ स्पष्ट करने में सहायता करता है। भविष्यद्वक्ताओं ने "प्रभु का दिन" का प्रयोग किसी भी ऐसे दिन के लिये किया, जब प्रभु सामर्थी रूप से अपने लोगों को बचाएगा या दण्ड देगा। नए नियम में, "प्रभु का दिन" नियमित रूप से प्रभु की वापसी का दिन है। मसीही उसकी वापसी की निश्चितता जानते हैं, परन्तु सही समय नहीं; केवल एकमात्र संकेत है, जैसे रात को चोर आता है वैसा ही प्रभु का आगमन होगा (मत्ती 24:36; देखें 1 थिस्स. 5:2)।

आयत 9. उद्धार का आश्वासन परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर आधारित है। एक सच्चा परमेश्वर बदलने वाला नहीं है, जैसा कि यूनानी अपने देवताओं के बारे में समझते थे। **परमेश्वर विश्वासयोग्य है** और अपने बच्चों का बचाव करेगा। **पुत्र की संगति** 1:9 में यूनानी वाक्यांश का सर्वोत्तम अनुवाद है, जो सम्बन्धकारक में है और जिसका शाब्दिक अर्थ "उसके पुत्र की संगति के लिये" है। एक ऐसी संगति जिसमें मसीही एक-दूसरे के साथ साझा करते हैं ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब मसीह के साथ सामान्य संगति हो (1 यूहन्ना 1:6, 7)।

नाम के अपने निरन्तर उपयोग से, यह स्पष्ट है कि पौलुस की सोच मसीह में निहित थी। उसने यीशु मसीह को पत्री के आरम्भ से लेकर अन्त तक कुरिन्थियों के सामने रखा। अपनी शक्ति या ज्ञान पर निर्भर होने से परे रहते हुए, पौलुस ने अपनी दृष्टि प्रभु की ओर लगाई। उसका हर कार्य और हर विचार उसकी महिमा के लिये था जो खोए हुओं को अनन्त जीवन के लिये बुलाता है।

कलीसिया में फूट के बारे में पौलुस के उपदेश (1:10-17)

अपनी पत्री लिखने के दौरान, पौलुस ने कई प्रश्नों के उत्तर दिए, जो कुरिन्थियों की कलीसिया ने उसे भेजे थे। उन प्रश्नों के मिलने से पहले, प्रेरित कलीसिया में दलबन्दी (1:10-4:21) को सम्बोधित करना चाहता था। हाल ही में कुरिन्थ में हुए विचारों का आदान प्रदान, पौलुस की सोच पर कब्ज़ा करने के लिये विभाजन की समस्या का कारण था। कुछ रीति से, कलीसिया में झगड़े और असन्तोष को सम्बोधित करना प्रेरित के लिये सबसे कठिन समस्याएँ थीं। कुरिन्थ के कुछ मसीही पौलुस के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता में अत्यधिक गर्व दिखाते थे। मसीह की देह की एकता की तुलना में पौलुस के लिये कुछ बातें अधिक महत्वपूर्ण थी (इफि. 4:4-6)। किसी का भी उसके नाम को कलीसिया में किसी गुट के साथ जोड़ना उसके लिये समस्या वाली बात थी। जिस प्रकार जो लोग आज कलीसिया निर्माण करने का प्रयास कर रहे हैं, वे गवाही देंगे, नई मण्डलियाँ विभाजन के लिये अतिसंवेदनशील होती हैं।

कुरिन्थियों की कलीसिया की प्रवृत्ति को विभाजन की दिशा में योगदान देनेवाले कई कारक हो सकते हैं। जबकि भाइयों के पास विभिन्न आत्मिक वरदान थे, उनके पास मसीही विश्वास और व्यवहार को परिभाषित करने के लिये कोई आधिकारिक लिखित शब्द नहीं थे। नया नियम अभी भी रचना की प्रक्रिया में था। दूसरा, कुरिन्थियों के विश्वासियों ने स्वयं को स्वतन्त्र विचारकों के रूप में दिखाया था। वे नई आवाज़ सुनेंगे और नए विचारों का समावेश करेंगे; अन्यथा, उन्हें पौलुस की बात नहीं सुननी चाहिए और एक धर्म को अपनाना नहीं चाहिए जिनका उनके साथियों के बीच कोई आधार नहीं था। विचारों के इसी खुलेपन ने उन्हें पौलुस के संदेश को स्वीकार करने के लिये प्रेरित किया, ताकि उसकी शिक्षाओं के उलट-फेर के प्रति अतिसंवेदनशील हो सकें। तीसरा, कुरिन्थ एक शहर था जिसमें सभी प्रकार के शिक्षकों ने उनके आसपास के लोगों को सिखाया था। वहाँ के निवासी लोग उस समय के दार्शनिक धाराओं के लिये प्रयोग किए जाते थे। परिणामस्वरूप शिक्षकों या गुट सम्बन्धताओं के प्रति निष्ठा को परिभाषित करने वाली बातों का चित्रण और पुनर्चित्रण करना आम था। पौलुस कलीसिया में विभाजनकारी शक्तियों को काम करते देख आश्चर्यचकित नहीं होता, परन्तु वह नहीं चाहता था कि कोई उसे गुट के निर्माण का कारण ठहराए।

"भाइयों, आपस में मिले रहो" (1:10)

[10]हे भाइयो, मैं तुम से हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से विनती करता हूँ कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो।

आयत 10. 1:9 में प्रेरित ने "अपने पुत्र की संगति" का उल्लेख 1:10 की

शुरूवात में आपस में मिले रहने के लिये विनती आसान बदलाव के लिये किया। मसीह के साथ संगति मसीहियों को एकसाथ बान्धे रखता है, परन्तु कुरिन्थ के विश्वासियों ने इस एकता को अनदेखा किया क्योंकि वे अपने हितों का पीछा करते थे। यहाँ, अपने अन्य पत्रियों के समान, पौलुस अपनी आत्मा को प्रगट कर रहा था। यह कोई अलग, अकादमिक पत्र नहीं था। तरस, सहानुभूति, निराशा और क्रोध कुरिन्थियों की पत्रियों में स्पष्ट दिखाई देते हैं। अकेले 1 कुरिन्थियों में **भाइयों** का बहुवचन के रूप में बारह बार प्रयोग किया गया है। यह कैसे हो सकता है कि कलीसिया ने एक भाईचारे से समझौता किया था? मसीही गुटों और दलों में बट गए थे। प्रेरित ने धीरे से बदलाव शुरू किया। उसने उनसे अनुरोध किया कि वे वर्तमान पारिस्थितिक मामलों के साथ संगत न हों। वह चाहता था कि वे एक ही मन और एक ही मत में एकसाथ मिले रहें। यह विनती अकेले पौलुस की नहीं थी; यह हमारे **प्रभु यीशु मसीह के नाम पर कहा गया था**।

विश्वासियों में **फूट** विभिन्न स्तरों पर आ सकता है। कोई भी स्वीकार्य नहीं है। परमेश्वर के लोगों की व्यक्तिगत मण्डलियाँ कभी-कभी अन्य मण्डलियों में संगति देने से इनकार करती हैं। परिस्थितियाँ अलग-अलग होती हैं। कभी-कभी फूट तब होता है जब एक मण्डली उन रीतियों को अपना लेती है जो बाइबल की शिक्षा का इनकार करते हैं। ये तब भी देखे जाते हैं जब एक मण्डली अपने साथी मसीहियों पर अपनी सलाह और पसन्द थोपते हैं जो कहीं और आराधना करते हैं।

कुछ फूट का पड़ना कलीसिया के स्तर से परे नहीं जाते हैं। जब पौलुस ने अपने पाठकों को **एक ही बात कहने** और **एक ही मन और एक ही मत होकर मिले** रहने के लिए कहा, तो वह कुरिन्थियों की कलीसिया के आन्तरिक मामलों के बारे में सोच रहा था। एक कलीसिया के भीतर फूट अधिक व्यक्तिगत होती है, परन्तु बड़ी कलीसिया की तुलना में फूट के यह दृश्य कम विनाशकारी नहीं होते हैं। नया नियम मसीहियों को प्रेम, सम्मान और एक दूसरे का आदर करने के लिये अधिकाई से आग्रह करता है, जो उल्लेखनीय है। शायद कलीसियाई स्तर पर एकता बनाए रखने के द्वारा प्रभु का आदर करने के प्रयास से विश्वास की कोई भी परीक्षा अधिक सार्थक नहीं है।

"तुम में फूट का कोई आधार नहीं है" (1:11-16)

[11]क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। [12]मेरे कहने का अर्थ यह है कि तुम में से कोई तो अपने आप को "पौलुस का," कोई "अपुल्लोस का," कोई "कैफ़ा का," तो कोई "मसीह का" कहता है। [13]क्या मसीह बँट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला? [14]मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि क्रिस्पुस और गयुस को छोड़ मैं ने तुम में से किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया। [15]कहीं ऐसा न हो कि कोई कहे कि तुम्हें मेरे नाम पर बपतिस्मा मिला। [16]और हाँ, मैं ने स्तिफनास के घराने को भी बपतिस्मा

दिया; इनको छोड़ मैं नहीं जानता कि मैं ने और किसी को बपतिस्मा दिया।

आयत 11. कोई भी बहुत जल्दी मान सकता है कि खलोए एक मसीही व्यापारी थी, जिसके लोग कुरिन्थ और इफ़िसुस के बीच यात्रा करते थे। यह नाम एक स्त्री का है, परन्तु हम यह सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं कि वह एक मसीही थी। अनुवाद "खलोए का घर" भ्रामक हो सकता है, क्योंकि यूनानी वाक्यांश केवल इतना ही बताता है कि कुछ लोगों के साथ खलोए का परस्पर सहयोग है। उसका परिवार या उसके प्रतिनिधि पौलुस के सम्पर्क में कई तरह से आ सकते हैं। खलोए स्वयं या तो कुरिन्थ या इफ़िसुस का मूल निवासी हो सकती है। वह जो भी थी, पौलुस को खलोए के घराने के लोगों से कुरिन्थ के **मसीही समुदाय के भीतर गुटों और झगड़े** के बारे में पता चला था। इन मामलों के बारे में जानने के लिये उसके घराने के लोगों का सबसे स्वाभाविक तरीका, मसीही समुदाय में सहभागियों के सुविधाजनक स्थान से होगा। उनसे पौलुस ने सीखा था कि **उन में झगड़े होते थे**। यह समस्या को बढ़ावा दे रहा था।

आयत 12. इस आयत में वाक्यांशों का मूल्यांकन करने के लिये बहुत सावधानी की आवश्यकता है। उनकी व्याख्या 1 कुरिन्थियों के सभी शुरूवाती अध्यायों के पठन को प्रभावित करती है। कुछ लोग सुझाव देते हैं कि प्रेरित विभेदकारी भावनाओं के, जो कुरिन्थ में कार्य कर रहे थे पर एक लघु व्यंग्य की पेशकश कर रहा था। इसी प्रकार, जब पौलुस ने अध्याय 3 और 4 में विभाजन के बारे में सिखानेवालों के नामों के साथ बताया, जो यह इंगित करता है कि वास्तविक दलों का गठन उनके नामों के आसपास हुआ करता था। गुटों ने नारे बनाए थे कि **"मैं पौलुस का हूँ"** या **"मैं अपुल्लोस का हूँ,"** परन्तु इससे कोई निष्कर्ष नहीं निकलता है कि सिखानेवालों ने स्वयं दलों के गठन को प्रोत्साहित किया था। सम्प्रदायों का गठन करना कुरिन्थियों का काम था।

बाइबल पाठकों को पता है कि पौलुस और अपुल्लोस कुरिन्थ में थे, परन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि पतरस[4] भी वहाँ था। पतरस के बारे में अन्तिम उल्लेख प्रेरितों के काम में तथाकथित यरूशलेम सम्मेलन (प्रेरितों 15:7) में किया गया था। हो सकता है उसने सम्मेलन के कुछ समय बाद यरूशलेम छोड़ दिया हो और कुरिन्थ में समय बिताया हो। वैकल्पिक रूप से, यहूदी मसीहियों ने यरूशलेम से पत्र लिखकर (देखें 2 कुरि. 3:1) शायद कुरिन्थ में आकर पतरस के नाम पर बोलने का दावा किया हो। प्रेरितों के काम 15:1 और गलतियों 2:11, 12 के संयोजन से पता चलता है कि यहूदी मसीही जो पौलुस के विरोधी थे, कभी-कभी उसके काम को निकम्मा ठहराने में पीछे उसके लगे रहते थे। इसके अलावा, 1 कुरिन्थियों के लेखन के दो वर्षों के भीतर, कलीसिया में कुछ लोग कुछ ऐसे समूहों के प्रभाव में आए थे जो अन्य-जाति मसीहियों पर मूसा के कानून को लागू करना चाहते थे (2 कुरिन्थियों 3:4-11)। कुछ लोगों ने पतरस की जानकारी के बिना उसे उनके दल का अगुवा होने का दावा किया।

पतरस का जो कुछ भी मामला रहा हो, पर मसीह उस शहर में नहीं पाया

जाता था। कोई भी आश्चर्य कर सकता है कि एक मसीह का गुट किस तरह से दिखाई देता होगा। क्या वे सभी मसीह के नहीं थे? जब प्रेरित ने 3:4-9 में गुटों का फिर से उल्लेख किया तो उसने केवल अपना और अपुल्लोस का नाम दिया। 3:22 में हमें कैफ़ा के बारे में अतिरिक्त जानकारी मिलती है, परन्तु गुटों का मुद्दा वहाँ नहीं था। क्योंकि पौलुस और अपुल्लोस कुरिन्थियों के प्रमुख अगुवे थे, और क्योंकि उनके व्यक्तिगत लक्षण बिल्कुल अलग थे, शहर के कुछ मसीही शायद दोनों में से किसी एक को अपने आदर्श के रूप में मानते थे।

दार्शनिक मतभेदों के लिये अपील द्वारा गुटों का गठन किया गया था। केवल बाद में पौलुस पर एक और दूसरा अपुल्लोस पर एक गुट का झुकाव हुआ। मिश्रित लोगों में अन्य नाम जोड़कर, पौलुस ने उनके व्यवहार की मूर्खता का प्रदर्शन किया। "हम एक पतरस के गुट में रख देते हैं," शायद उसने कहा, "और एक मसीह गुट।" कुरिन्थ में गुटों ने व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और दार्शनिक झुकावों के आसपास घूमते हुए देखा, जो या तो पौलुस या अपुल्लोस को अधिक अनुकूल बनने के लिये मिला। यदि पतरस और मसीह के अनुयायियों का दावा करने वाले दलों में मौजूद थे, तो पतरस गुट शायद उन शिक्षकों की तरह थे जो पौलुस के पीछे गलातियों की कलीसिया में चले गए (गला. 5:3-6)। यदि मसीह का एक असली दल था, तो हो सकता था कि उसके सदस्यों ने प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा के कारण श्रेष्ठता का दावा किया हो - एक निष्ठा जिस सोच ने उन्हें दूसरों से अधिक सच्चा भक्त बना दिया।

पौलुस ने कोई संकेत नहीं दिया कि दलों ने विभिन्न बातों को सिखाया है। प्राचीन जगत में, व्यक्तिगत निष्ठा सब कुछ था; सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा अक्सर अविद्धमान होता था। पौलुस, अपुल्लोस और पतरस का इस मामले के लिये, विश्वास के केन्द्रीय सिद्धान्तों पर एक सामान्य मत था, यद्यपि उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अधिक ज़ोर दिया हो। प्रेरितों के काम में अपुल्लोस का विवरण बताता है कि वह सुवक्ता और विद्वान दोनों ही था। सम्भवत: वह उन लोगों की दृष्टि में एक अधिक अनुकूल व्यक्ति होगा जो विश्व के ज्ञान को मानने वाले लोगों के बीच सम्मान की माँग करते थे। समय के चलते, वे स्वयं को दूसरों की तुलना में बेहतर समझने वाले लगते हैं।

आयत 13. प्रेरित के मामलों के अरुचिकर वर्णन शीघ्रता से चिड़चिड़ाहट में बदल गया। **क्या मसीह बँट गया?** के साथ उसने कई प्रश्नों की शुरूवात की है? क्या कोई व्यक्ति मसीह को बाँट सकता और भाग कर सकता है? प्रेरित के लिये, मसीह के देह को भागों में विभाजित करने का अर्थ, स्वयं प्रभु को विभाजित करने के समान था। कलीसिया मसीह की देह है (इफि. 1:22, 23)। यूनानी का एक अनुवाद (μεμέρισται, *मेमेरिसताई),* बिल्कुल सही है "क्या मसीह बँटा हुआ है?" इसका अनुवाद पौलुस की समझ को ग्रहण करता है। अविश्वास ने एक उत्तर की माँग की: "क्या आप मसीह की देह को भागों में विभाजित करने की साहस रखते हैं?"

पौलुस ने शायद पूछा होगा, "क्या अपुल्लोस या कैफ़ा तुम्हारे लिये क्रूस पर

चढ़ाया गया था?" परन्तु मामलों की स्थिति का व्यक्तिगत प्रहार था। दूसरे अपने स्वयं के लिये बात कर सकते हैं; पौलुस अपने नाम को स्पष्ट करना चाहता था। **क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया?** प्रेरित को यह विश्वास होना चाहिए कि उसके नाम का पहनावा उसके प्रभु होने का दावा करने के समान था। वह इस विचार से भयभीत था।

पौलुस का तीसरा प्रश्न - **क्या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला? -** विशेष रूप से रुचिकर है। यह मसीह में बपतिस्मा पाए हुए और मसीह में होने के बीच किए गए सहयोग के बारे में अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। प्रश्न पूछकर, पौलुस ने दिखाया कि बपतिस्मा लेने के बिना मसीही बनना समझ से परे था (देखें रोम. 6:3, 4)। जब उसने पूछा, क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? यह निहितार्थ था कि पौलुस नहीं बल्कि मसीह को उनके लिये क्रूस पर चढ़ाया गया था। उसने तुरन्त एक अपील के साथ इस प्रश्न का पालन किया कि उन्हें बपतिस्मा दिया गया है। वह अपने पाठकों पर भरोसा कर सकता था यह समझने के लिये कि बपतिस्मा क्रूस के लाभों में भागी होने के लिये एक साक्षी था (देखें कुलु. 2:12)।

आयत 14. पौलुस को पौलुस के नाम पर बपतिस्मा देने के लिये व्यक्तिगत रूप से एक विश्वासी को बपतिस्मा देने की आवश्यकता नहीं होती। फिर भी, प्रेरित यह जानना चाहता था कि ऐसी किसी बात के लिये उसका कोई दल नहीं है। कुछ लोग दावा कर सकते थे कि पौलुस ने उन्हें बपतिस्मा दिया था, और कोई भी सही नहीं कह सकता था कि उसने अपने नाम पर बपतिस्मा दिया था। पौलुस इस विचार से चकित था।

फिलहाल प्रेरितों ने केवल दो लोगों को स्मरण किया जिन्हें उसने व्यक्तिगत रूप से बपतिस्मा दिया था: **क्रिस्पुस और गयुस**। हम यह अनुमान लगाने के लिये छोड़ देते हैं कि पौलुस ने इन दो लोगों को बपतिस्मा क्यों दिया। दोनों धनी और जाने माने लोग हैं। जब पौलुस ने रोम के लोगों को कुरिन्थ से अपनी पत्री लिखी थी, तो उसने कहा था कि गयुस उसकी और कुरिन्थ की पूरी कलीसिया की पहुनाई करनेवाला था (रोमि. 16:23)। पता चलता है कि, गयुस के पास एक बड़ा घर था। क्रिस्पुस अपने परिवर्तन से पहले कुरिन्थ में यहूदी आराधनालय का अगुवा था (प्रेरितों 18:8)। पौलुस ने उन्हें उनके उच्च सामाजिक स्तर के कारण निजी तौर पर बपतिस्मा दिया होगा। उनका बपतिस्मा कलीसिया के लिये विशेष अवसर हो सकते हैं। गेर्ड थिसेन ने कहा, "यह ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस ने अपने बपतिस्मा को समुदाय के कुछ प्रभावशाली और महत्वपूर्ण सदस्यों तक सीमित कर दिया था।"[5] कलीसिया में विभाजन सम्भवतः उच्च और निम्न सामाजिक स्थिति के बीच तनाव का पाया जाना हो सकता था (देखें 1 कुरि. 11:20-22)।

आयत 15. पौलुस का रक्षात्मक रुख एक संकेत है कि कलीसिया के भीतर आलोचकों का पाया जाना था। यहाँ तक कि यदि किसी ने पौलुस के नाम पर बपतिस्मा लेने का दावा किया है, तो वह यह चाहता था कि वह अपने ज्ञान या

स्वीकृति के साथ नहीं किया गया। वह निश्चित रूप से यह कह सकता है कि उसने किसी भी कुरिन्थ मसीही को बपतिस्मा नहीं दिया था, जो दावा कर सकता था उसे **उसके नाम** पर **बपतिस्मा** मिला।

आयत 16. प्रेरित अपने हाथों से केवल क्रिस्पुस और गयुस को बपतिस्मा देने के अपने दावे पर अड़ा हुआ था। पर उसे स्मरण आया कि उसने **स्तिफनास के घराने** को भी बपतिस्मा दिया था, एक मसीही जिसका प्रेरितों के काम या रोमियों 16 में कोई उल्लेख नहीं है। शब्द "घराना," यहाँ पर या प्रेरितों के काम 16:15, 34 में, यह सुझाव नहीं देता कि वयस्कों के साथ शिशुओं को भी बपतिस्मा दिया गया था। बपतिस्मा के लिये एक उपयुक्त उम्मीदवार कौन है, वह किसी अन्य आधार पर "घराना" के संदर्भ से तय किया जाना चाहिए।

क्रिस्पुस और गयुस के साथ स्तिफनास, शायद कुरिन्थ की कलीसिया में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था। पौलुस ने बाद में कुरिन्थियों को स्मरण कराया कि स्तिफनास कुरिन्थ के पहले बने विश्वासियों में से एक था और कलीसिया को आत्मिक नेतृत्व के लिये स्तिफनास जैसे लोगों (16:15, 16) को देखने का आग्रह किया था। ऐसा लगता है कि स्तिफनास ने, अन्य लोगों के साथ, कुरिन्थ कलीसिया से एक पत्र के साथ इफ़िसुस की यात्रा की थी (7:1; 16:17)। उनके साथ दो पुरुषों के नाम थे जो दासों के लिये आम थे। "भाग्यशाली" का अर्थ "भाग्यवान" की तरह है; "अखाईकस" एक सामान्य नाम है सम्भवतः जिसकी पहचान अखाया से होने से हुई थी, और अखाया प्रान्त के लिये कुरिन्थ रोमी सरकार की कुर्सी थी। स्तिफनास ने पौलुस से परामर्श करने के लिये कुरिन्थ से इफ़िसुस की यात्रा के लिये अपने कुछ दासों को अपने साथ ले लिया होगा। यात्रा के साथ जोखिम हमेशा होता था। तीन मनुष्यों का एक साथ यात्रा करना अकेले मनुष्य के यात्रा करने से अधिक सुरक्षित होता है।

यह स्वीकार करने के बाद कि उसने स्तिफनास को बपतिस्मा दिया था, पौलुस ने अपने आप का बचाव किसी भी प्रकार की स्मरण शक्ति को बनाए रखकर उनकी उदारता की माँग करने के द्वारा किया। **मैं नहीं जानता कि मैं ने और किसी को बपतिस्मा दिया**, प्रेरित ने इस बात को स्वीकार किया। पौलुस का धोखा देने का कोई इरादा नहीं था। यदि वह उन लोगों का उल्लेख करने में विफल हो जाता है जिन्हें उसने व्यक्तिगत रूप से बपतिस्मा दिया था, तो यह स्मृति की विफलता के कारण था। उसके शब्द एक स्मरण करनेवाला है जिसकी प्रेरणा पवित्र आत्मा द्वारा शब्दों के श्रुतलेख से कहीं अधिक थी। पवित्र आत्मा जानता था कि प्रेरित ने कितने लोगों को बपतिस्मा दिया था; जो कि पौलुस स्वयं नहीं जानता था।

"मसीह के क्रूस पर ध्यान केन्द्रित करें" (1:17)

[17]क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, वरन् सुसमाचार सुनाने को भेजा है, और यह भी शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं, ऐसा न हो कि मसीह का क्रूस व्यर्थ ठहरे।

आयत 17. पौलुस का कुरिन्थ के कुछ लोगों को अपने हाथों से बपतिस्मा देने का कारण था कि प्रभु ने उसे **सुसमाचार सुनाने** को भेजा था। पौलुस के प्रचार का तरीका और उसकी कही जाने वाली बातों का तत्व प्रभु के प्रकाशन पर आधारित थे। पौलुस ने कुरिन्थ में जो सिखाया था, मसीह के एक प्रेरित का अधिकार उसमें सुरक्षित था। बपतिस्मा मसीह की शारीरिक स्वीकृति है; जिनके हाथ बपतिस्मा देते हैं वह उपेक्षा की बात होती है। जब कोई पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले लेता है तो प्रभु क्या करता है, यह जानना अति आवश्यक है। प्रेरितों के शब्दों में कोई संकेत नहीं है कि बपतिस्मा एक वैकल्पिक ज़रूरत है। मसीह में बपतिस्मा लेने का अर्थ गाड़ा जाना और उसके साथ जिलाया जाना होता है (रोमि. 6:4; कुलु. 2:12)। मेम्ने के छुटकारा के लहू में विश्वास करने के द्वारा बपतिस्मा में मसीही धोए जाते और पवित्र किए जाते हैं (1 कुरि. 6:11)।

एक प्रकार के ज्ञान के साथ पौलुस ने अपने प्रचार को विपरीत बताया जिसने **मसीह के क्रूस** को व्यर्थ ठहरा दिया, उसने स्पष्ट किया कि कलीसिया में फूट का एक बड़ा कारण है कुरिन्थियों का सांस्कृतिक रूप से परिभाषित ज्ञान पर अधिक महत्व दिया जाना था। प्रेरित का प्रचार इस प्रकार का नहीं था, जिसने कई ऐसे प्रवासी शिक्षकों को बताया जो कुरिन्थ और अन्य यूनानी शहरों में उन दिनों में दिखाई देते थे। उन्होंने दूसरों को अपनी शिक्षा या सुवचन के साथ प्रभावित करने का प्रयास नहीं किया। उसका संदेश एक ईश्वरीय देन था। मानव प्रयासों पर भरोसा करना मसीह के क्रूस को व्यर्थ ठहराना होगा। पौलुस ने न केवल उस पर मसीह को जिसका वह प्रचार करता था, बल्कि जिस तरीके से प्रचार करता था उसके माध्यम से प्रसन्न करने की इच्छा रखता था।

पहले से ही, पौलुस ने कुरिन्थियों को आश्वासन दिया था कि, भाषण और ज्ञान में, वे मसीह (1:5) की समृद्धि के हिस्सा थे; परन्तु कुछ विश्वासियों को और अधिक पाने की चाह थी। शब्दों के ज्ञान और दर्शनशास्त्र के साथ प्रेम प्रसंग कुरिन्थ का एक तत्व बन गया था, जिसे यूनानी-रोमी जगत में सीखने के लिये पारित कर दिया गया था (3:18-20)। प्रेरित उस समय के भाषण कला को जानता था, वह **शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं** आया था। परन्तु न तो उसने उनसे जो बात की थी और न ही उसने जो लिखा था, इसके प्रभाव के लिये जाँच किया गया था। कलीसिया का लोगों के बीच छवि जो कलीसिया के तत्व की तुलना में कम चिन्ता का विषय था। पत्री में प्रेरित की प्रतिष्ठा एक व्यक्ति के रूप में, "मसीह के क्रूस" से अधिक महत्वपूर्ण नहीं था। पौलुस के लिये, चतुराई को आगे बढ़ाने का तात्पर्य क्रूस पर प्रदर्शित परमेश्वर के अनुग्रह को शून्य करना था।

परमेश्वर का ज्ञान (1:18-31)

कुरिन्थ और अन्य यूनानी शहरों में धार्मिक जलवायु ने ज्ञान के शब्दों और परिष्कृत अटकलों की सराहना की। पौलुस के शब्दों में कुछ भी भ्रामक सीखने का

एक विशेष ब्राण्ड नहीं है। कलीसिया में फूट की भावना, भिन्नताओं और विश्वासयोग्यता का परिणाम था, जिसने कुछ मसीहियों की प्रतिष्ठा का समर्थन किया जिन्होंने इसका प्रयोग दूसरों पर हावी होने के लिये किया। कलीसिया ने शक्ति और प्रभाव के संसार के मानकों को अपनाना था। अपनी निराशा के विरुद्ध संघर्ष करते हुए, पौलुस ने अपने पाठकों को यह बताना चाहा की संसार के रूप में परिभाषित शक्ति और ज्ञान उन लोगों के सामुदायिक जीवन में कोई हिस्सा नहीं हैं जो यीशु को मसीह मानते हैं। जिन लोगों ने प्रभु की सेवा की थी, वही क्रूस पर चढ़ाया गया था। परमेश्वर ने संसार के तुच्छ लोगों को चुना था। कुरिन्थ की मसीहियों को स्वभाव की समस्या थी; उनके व्यवहार को उस हद तक बदलने की जरूरत थी कि वे मसीह की आत्मा को आत्मसात करने में सक्षम थे।

क्रूस की कथा का सन्देश "मूर्खता" है (1:18-25)

18क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिये मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है। 19क्योंकि लिखा है, "मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नष्ट करूँगा, और समझदारों की समझ को तुच्छ कर दूँगा।" 20कहाँ रहा ज्ञानवान? कहाँ रहा शास्त्री? कहाँ रहा इस संसार का विवादी? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया? 21क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे। 22यहूदी तो चिह्न चाहते हैं, और यूनानी ज्ञान की खोज में हैं, 23परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं, जो यहूदियों के लिये ठोकर का कारण और अन्यजातियों के लिये मूर्खता है; 24परन्तु जो बुलाए हुए हैं, क्या यहूदी क्या यूनानी, उनके निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है। 25क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है, और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है।

आयत 18. पौलुस ने दो विपरीत समूहों के लोगों के बारे में बताया: **नाश होनेवाले** और **हम उद्धार पानेवाले**। उसने चल रही प्रक्रिया पर ध्यान आकर्षित करने के लिये वर्तमान काल का प्रयोग किया। उसका विपरीत कहने का तात्पर्य बचाए गए और नाश हो गए लोगों के बीच में नहीं था, परन्तु उन लोगों के बीच में था जो नाश हो रहे थे और उद्धार पा रहे थे। पौलुस के लिये, मसीह में होना उसे परिभाषित करना नहीं था, "एक बार और सदा के लिये"; संसार में रहते हुए यह एक ऐसी अनोखा दृश्य था जिसमें एक पल का निर्णय अगले पल का पालन करता था।

"नाश होनेवालों" पर उल्लेख करना उनकी दृष्टि थी कि क्रूस पर चढ़ाया जाने वाला उद्धारकर्ता का पूरा विचार **मूर्खता** था। क्रूस का संदेश मानव आँखों के लिये मूर्ख और एक बाधा है। मूर्खता जिसे संसार ज्ञान समझता है: केवल मनुष्यों के लिये, कुछ भी विवेकपूर्ण या दार्शनिक नहीं लगता है किसी संदेश के बारे में जो

एक निष्पादित आपराधी से सम्बन्धित है।[6] मसीहियों के अंगीकार के शुरूवाती बिंदु (15:3) ने परिष्कृत सीख रखनेवाले ज्ञानवान व्यक्ति के विचार को विवादित किया।

"हम उद्धार पानेवालों" का वर्णन यह विश्वास है कि क्रूस का तमाशा परमेश्वर की **सामर्थ्य** को दर्शाता है। सामर्थ्य की धारणा, चतुराई, संसार का ज्ञान खत्म हो गया था जब परमेश्वर ने क्रूस पर यीशु नासरी को भेजकर मानव परिवार को छुड़ाया था। मसीही समुदाय को क्रूस द्वारा आकार दिया गया था। प्रेरित अपने पाठकों को समझाने के लिये व्याकुल था। मानव निष्ठा और प्रतिष्ठा के लिये प्रतियोगिता पर निर्मित विभाजनकारी व्यवहार ने दर्शाया कि कुरिन्थ के लोग क्रूस को समझने में विफल रहे। वे विडम्बना को देखने में कैसे विफल रहे? प्रेरित को क्रूस पर मरने वाले लोगों की व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं थी। असहाय लोगों को, निर्वासित लोगों को, दुष्ट लोगों को क्रूस पर चढ़ाया गया - राजकुमारों, राजाओं, बचानेवालों को नहीं। परन्तु, "हम उद्धार पानेवालों" के लिये परमेश्वर का सामर्थ्य क्रूस में है।

आयत 19. क्रूस ने संसार को एक मौलिक नवीनता प्रदान की, मानव शक्ति और शासन के हर स्तर को चुनौती दी। यहूदी शास्त्र के विवेकी पाठक क्रूस को उस विषय की निरन्तरता के रूप में पहचान सकते हैं जो परमेश्वर के प्रकाशन से कभी भटकने नहीं देता। प्राचीन लोगों की कहानी जो शिनार के मैदान में रहते थे, नाश होनेवालों के लिये (उत्पत्ति 11:1-9) एक प्रतीक है। मनुष्यों ने हमेशा अपने मीनारों का निर्माण किया है, और परमेश्वर हमेशा ही उनके भाषाओं में गड़बड़ी उत्पन्न करने के लिये नीचे उतर आया है। हन्ना (1 शमूएल 2:1-10) से मरियम (लूका 1:46-55) तक, परमेश्वर आवश्यक जनों को राख के ढेर से उठाते आया है। जब उसने यशायाह के माध्यम से कहा, तो वह कोई नई बात नहीं कह रहा था, **"तब इनके बुद्धिमानों की बुद्धि नष्ट होगी"** (देखें यशा. 29:14)।[7] पौलुस ने कहा था कि कुरिन्थ के मसीही क्रूस और परमेश्वर के प्रकाशन की ओर देख, ज्ञान के शब्दों और परिष्कृत सीख की शक्ति से उत्साहित लोगों की आलोचना कर बहुत अच्छा काम करेंगे।

आयत 20. पौलुस ने जो प्रश्न उठाए थे कि कुरिन्थ के विश्वासियों में कोई भी नहीं था, जो संसार के द्वारा सीखने के लिये प्रशंसित थे। प्रश्न **कहाँ रहा ज्ञानवान?** का उन्हें स्मरण कराना एक सम्मानजनक तरीका था कि संसारिक ज्ञान उनके उद्धार का स्रोत नहीं था। प्रेरित ने एक पूर्ण अर्थ में ज्ञान को अस्वीकार नहीं किया। बल्कि, उसने कहा कि परमेश्वर द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान, संसार के ज्ञान की तुलना में एक अलग क्रम पर होता है (2:6)। यीशु ने भी यही बात कही: "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया" (लूका 10:21)।

गलती से या लिखित रूप में, एक मामले की चतुराई से तर्क करते हुए, यह यूनानी और रोमी लोगों के लिये ज्ञान और सीखने का प्रतीक था। पौलुस कुरिन्थ

के मण्डली को चारों ओर उनकी संख्या को देखना और पूछना चाहता था, **कहाँ रहा शास्त्री? कहाँ रहा इस संसार का विवादी?** संसार के ज्ञानवानों के पास मसीह के लिये कोई समय नहीं था। कुरिन्थियों के लिये पौलुस का प्रश्न यह था: "संसार की सुख सुविधा के लिये तुम्हारी इस प्रशंसा का स्रोत क्या है?" जब परमेश्वर ने मसीहियों को अपनी आशीषें दी, तो उसने संसार के ज्ञान को मूर्खता ठहराया?

पौलुस ने शायद लोगों की विशिष्ट श्रेणियों को ध्यान में नहीं रखा था: कुछ "ज्ञानवान," कुछ "शास्त्री" और कुछ "विवादी"थे। वह शायद आयत 20 में सामान्य तौर पर उन बातों को सामान्य पदों के रूप में मानते थे जो अक्सर विश्व के मूल्यों और आदर्शों के साथ होते हैं। शायद वह तरसीस और यरूशलेम में अपनी शिक्षा पर प्रकाश डाल रहा था। उसके पास ज्ञान की कोई तृप्ति नहीं थी। सच्ची सीख मसीह के कारण की सेवा कर सकते हैं; परन्तु उसने कुरिन्थ में ज्ञान के आत्म-सेवा गुणों को आगे नहीं बढ़ने दिया।

आयत 21. जितना तेज हो सके, सुसमाचार की **मूर्खता** जिसके बारे में मसीहियों ने पौलुस से प्रचार करते सुना था, उनके साथ पौलुस ने व्यापार क्षेत्र के सिद्धान्तों और ज्ञानवान दार्शनिकों से प्राप्त **ज्ञान** का विरोधाभास किया। उसने अवलोकन किया था कि मानव जाति, अर्थात् **संसार** (κόσμος, *कोसमोस)* उसके अपने आप पर चलने के लिये छोड़ दिया है, जिन्हें प्राकृतिक परिदृश्यों में परमेश्वर की केवल एक चमक तक पहुँचना था (रोमि. 1:20)। पाप ने जो भी अन्तर्दृष्टि दी थी, हो सकता है प्राकृतिक संसार ने उन्हें परमेश्वर के बारे में सिखाया हो। अपना ही ईश्वर बनने की माँग करते हुए, मनुष्य अपने अभिमान और सांसारिकता से प्रेम के कारण अधिक ऊँचा नहीं उठ सकते हैं। "वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए" (रोम. 1:22)।

परमेश्वर को जानने की पापी मानव-जाति की असफलता अपने आप में **परमेश्वर के ज्ञान** का प्रतीक था। फिर भी, परमेश्वर ने अभिमानी और अभिलाषी मन की ओर अपना पीठ नहीं घुमाया था। इसके विपरीत, निस्वार्थ और वर्णन से बाहर प्रेम रखते हुए उसने अपने बेटे को दुःख में मरने को भेजा। पुत्र की मृत्यु से, उसने मेलमिलाप का दरवाज़ा खोल दिया। जो लोग विश्वास करते थे वे इस **प्रचार** के [पौलुस] ... **द्वारा** बच गए थे, फिर भी संसार क्रूस पर चढ़ाए परमेश्वर में कोई ज्ञान नहीं ढूँढ़ पाया। सांसारिक ज्ञान देवताओं की स्वयं की छवियों को दर्पण में दिखाता है। परमेश्वर का एकमात्र ज्ञान जिसकी सच्चाई का दावा है, वह परमेश्वर के स्वयं के प्रगट होने का परिणाम है। परमेश्वर को जानना उसके मार्गदर्शन और उसके व्यवहार को संरेखित करने के लिये उस पर निर्भर रहना है ताकि नैतिक और व्यावहारिक रुख उन सद्गुणों के अनुरूप हो जो परमेश्वर ने स्वयं में होने को दिखाया है।

आयत 22. पौलुस ने मानवता की प्रतिक्रिया को क्रूस पर चढ़ाए हुए उद्धारकर्ता के बारे मूर्खता के प्रचार को दो श्रेणियों: यहूदी और यूनानी में विभाजित किया। निःसंदेह, यह सामान्य बात थी। न तो हर यहूदी और न ही हर

यूनानी ने उसी तरह प्रतिक्रिया व्यक्त की; परन्तु जब किसी धर्म समूह ने अपनी परम्पराओं, अपनी प्रतिभा पर भरोसा किया, तो उसने परमेश्वर का ज्ञान त्याग दिया। **यहूदी** तो स्वर्ग से **चिह्न चाहते** हैं, जो उस सच्चाई को प्रमाणित कर सके जो वे सुन रहे थे। यीशु ने उनके प्रश्नों का सामना किया। पौलुस यीशु के गलील की सेवकाई के बारे में कितना जानता था यह एक आम प्रश्न है, परन्तु प्रेरित ने यीशु और यहूदी धार्मिक अगुवों के बीच हुए मुठभेड़ों की खबरों को सुना होगा। उन्होंने कहा, "हे गुरु, हम तुझ से एक चिह्न देखना चाहते हैं" (मत्ती 12:38)। उसके चेलों में से बहुतों ने यह सुनकर कहा, "यह कठोर बात है; इसे कौन सुन सकता है?" "फिर तू कौन सा चिह्न दिखाता है कि हम उसे देखकर तेरा विश्वास करें?" (यूहन्ना. 6:30).

यहूदी लोगों की विडम्बना यह संकेत थी कि यीशु की सेवकाई चिह्नों से भरी हुई थी। यहूदियों ने यशायाह की भविष्यवाणी को पूरा किया: "... वे देखते हुए देखें और उन्हें सुझाई न पड़े और सुनते हुए सुनें भी और न समझें" (मरकुस 4:12; देखें यशा. 6:9, 10)। चिह्न यीशु के कामों को सीमित नहीं कर सकते थे। प्रेरित बाद में कुरिन्थियों को लिखता है, "प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच सब प्रकार के कामों से दिखाए गए" (2 कुरि. 12:12)। यहूदियों ने तत्परता से, "प्रचार किए गए संदेश की मूर्खता" (1 कुरि. 1:21) का उत्तर दिया था, वे चिह्न चाहते थे, परन्तु कोई चिह्न उन्हें संतुष्ट नहीं कर सका।

एक क्रूस पर चढ़ाया गया उद्धारकर्ता का सुसमाचार के लिये **यूनानियों** की प्रतिक्रिया एक जानबूझकर मुस्कुराहट थी; उनके पास **ज्ञान** की खोज की एक प्रतिष्ठा थी। प्रारम्भिक मसीही युग के दौरान यूनानी विचारकों के बीच दार्शनिक अटकलें दूर-दूर तक फैली थीं। उनके लिये, बुद्धि की कोशिकाओं को नहीं हटाई गई थी, जहाँ ज्ञानवान अकेले में प्रफुल्लित हो उठे थे। सड़क प्रचारक अज्ञानता से परिष्कृत तक पहुँच गए। आकस्मिक पर्यवेक्षक समझदार आलोचक बन गए। मोची और चर्मकारों ने शहर में प्रवेश करने के लिये सबसे हाल के दार्शनिक के गुण पर बहस की। कई यूनानियों के लिये, पौलुस नवीनतम प्रदर्शन था। उन्होंने शब्दों के खेल, ज्ञान के वचन, और उपन्यास स्पष्टीकरण पर सूक्ष्मता की तलाश की। परमेश्वर को जानना और क्रूस पर चढ़ाया जाना और जी उठनेवाले उद्धारकर्ता के कारण जीवन को बदलने की सम्भावना ज्ञान की यूनानी खोज से परे थी।

आयत 23. झिझक के बिना, एक प्रभावी "हम" का उपयोग करते हुए, पौलुस ने कुरिन्थियों को यहूदियों के लिये चिह्नों की माँग और बुद्धि के साथ यूनानी मोह के विकल्प की पेशकश की: **क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं।** उसने परमेश्वर के अभिषेक के विषय में यहूदी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिये कोई संकेत नहीं दिया; उसने अन्य-जाति बुद्धिमान लोगों को षड्यन्त्र करने के लिये कोई बुद्धि नहीं दी। सच्चाई किसी दिशा में रखी थी पर किसी मनुष्य ने ग्रहण नहीं किया। क्रूस पर अन्तिम विडम्बना और परमेश्वर की बुद्धि की अन्तिम अभिव्यक्ति दोनों थी: "वह निर्बलता के कारण क्रूस पर चढ़ाया तो

गया, तौभी परमेश्वर की सामर्थ्य से जीवित है" (2 कुरि. 13:4)।

लियोन मॉरिस ने उल्लेख किया, "क्रूस की सामर्थ्य अति नम्र लोगों के लिये परमेश्वर को जानने के लिये और बुराई पर जय पाने के लिये मार्ग खोलती है, और यह एक सर्वोच्च ज्ञान है जो दार्शनिकों के किसी भी विचार जो वे प्रस्तुत कर सकते हैं से बढकर होता है।"[8] ब्रेवार्ड एस चाइल्ड ने कहा, "क्रूस का प्रतीक मसीह की मृत्यु के बारे में पौलुस की समझ का केन्द्र बन गया, जो कि मानवता की अक्षमता को उसके पार करने के लिये उसके बड़े कठोर रूप में चित्रित करता है।"[9]

यूहन्ना बप्तिस्मादाता ने मसीह का परिचय यह कहते हुए दिया था, "देखो, परमेश्वर का मेम्ना" (यूहन्ना 1:29)। दशकों के बाद, प्रेरित यूहन्ना ने एक दर्शन में देखा कि कोई सफेद घोड़े पर बैठा था। उसने बताया, "... और उसे एक मुकुट दिया गया, और वह जय करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त करे" (प्रका. 6:2)। क्रूस पर चढ़ाया हुआ मसीह राज्य करनेवाला उद्धारकर्ता बन गया था। परमेश्वर के सामर्थ्य ने यहूदियों की अपेक्षाओं को निरस्त कर दिया था; उसकी बुद्धि ने क्रूस की मूर्खता में निहित बातों से अन्य-जाति को चकित कर दिया था। निर्बलता में सामर्थ्य और ज्ञान में व्यर्थता का विरोधाभास के लिये एक मार्गदर्शक तारा बन गया। "यदि घमण्ड करना अवश्य है," फिर वह आगे लिखता है, "तो मैं अपनी निर्बलता की बातों पर घमण्ड करूँगा" (2 कुरि. 11:30)। "... जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवन्त होता हूँ" (2 कुरि. 12:10)।

आयत 24. प्रेरित ने अपना कार्य जारी रखते हुए मनुष्यों की अपेक्षाओं (संकेत और दार्शनिक अनुमानों) के द्वारा परिभाषित परमेश्वर की पहुँच में अन्य एक पहुँच के साथ विरोधाभास किया जो कि परमेश्वर के बचाने की पहल करने के लिये उसके बाट जोहने की है। मसीही शिक्षा ईश्वरीय बातों में भावात्मक अटकलों पर आधारित नहीं है; यह परमेश्वर ने जो किया है उसकी एक गवाही है। सभी मनुष्यों के लिये नहीं, परन्तु **जो बुलाए हुए हैं**, क्रूस पर मसीह **परमेश्वर की सामर्थ्य और परमेश्वर का ज्ञान है। वे मसीही "बुलाए हुए" हैं**, जो परमेश्वर की पहल पर ध्यान देते हैं; सकारात्मक रूप से बुलाहट पर प्रतिक्रिया देने के लिये यह मनुष्य की आवश्यकता को नहीं हटाता है।

पौलुस का प्रचार किसी दार्शनिक विद्यालय का उत्पाद नहीं था। बल्कि, यह एक प्रकाशन था जिससे कि प्रेरित और उसके पाठक छुड़ाए गए थे क्योंकि परमेश्वर ने कभी भी उनसे प्रेम करना नहीं छोड़ा, यहाँ तक कि पाप की उपस्थिति में भी। प्रेरित का ध्येय था कि जब कुरिन्थ के लोग मसीह के संदेश को गंभीरता से लेना शुरू कर दिया, तो उनके बीच फूट और मानव क्षमता और ज्ञान की अपील का महत्व कम हो जाएगा।

आयत 25. पौलुस को इस सुसमाचार की सच्चाई पर विश्वास था कि वह मूर्खता और निर्बलता के अपने स्वरूप को स्वीकार करने के लिये तैयार था। मनुष्य के मानक स्तर के अनुसार, क्रूस में इसकी सराहना नहीं है। यह मानते हुए कि नाश होनेवाले लोगों के पास सुसमाचार को मूर्खता ठहराने का कारण है,

प्रेरित ने उत्तर दिया, **परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान है।** कि मनुष्यों का सुसमाचार को मूर्खता ठहराना, स्वयं ही परमेश्वर की ओर से इसके आने का एक प्रमाण है। मनुष्य की अपेक्षाओं के साथ संचार करने के लिये कोई भी व्यक्ति परमेश्वर से कुछ भी बातचीत की अपेक्षा नहीं करेगा। संसार का परमेश्वर की मूर्खता या ज्ञान के मूल्यांकन से अधिक महत्वपूर्ण यह सरल तथ्य है: **परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है।** मनुष्यों को जो तर्क देना है दें; अन्त में परमेश्वर ही की जीत होगी। प्रभु वापस आएगा। उद्धार क्रूस में है और रहेगा।

ज्ञान मसीह में पाया जाता है (1:26-30)

[26]हे भाइयो, अपने बुलाए जाने को तो सोचो कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए। [27]परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करे; [28]और परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को, वरन् जो हैं भी नहीं उनको भी चुन लिया कि उन्हें जो हैं, व्यर्थ ठहराए। [29]ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करने पाए। [30]परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो

आयत 26. उसने जो कहा था, उसका समर्थन करने के लिये, पौलुस ने कुरिन्थ के मसीहियों से अनुभव के लिये अपील की। मनुष्यों के सामने प्रतिष्ठा पाने के लिये, उनके लिये यह दार्शनिक और धार्मिक अटकलें लेना कितना अलग था, यह देखते हुए कि संसार ने पहले ही मसीह के प्रचार को खत्म कर दिया था और इससे इनकार कर दिया था। उनके बीच बहुत ज्ञानवान, बहुत सामर्थी, और बहुत कुलीन नहीं थे। मसीहत का भविष्य संसार के श्रेष्ठतम बौद्धिक वर्ग, पूंजीपतियों, या कुलीन वर्ग के साथ होनेवाला नहीं था। "मसीह, वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह" (2:2) का विश्वास होना था, जो कि मुख्य रूप से किसानों और आम मज़दूरों के मनों में बस गया।

मसीही युग की प्रारम्भिक सदी से, आलोचकों ने मसीहत के अनुयायियों को सीधा सादा जानकर आसानी से धोखा दिया है। दूसरी सदी में मसीहियों के एक विरोधी ने लिखा, कि वे उन लोगों के अनजान शेयर हैं जो अपने स्थानों से "ऊन-श्रमिक, जुते बनानेवाले श्रमिक, कपड़े धोने वाले श्रमिक, और सबसे अशिक्षित और मुढ़ व्यक्ति" और शिक्षक बनने में प्रयासरत जैसे लोग आए थे।[10] यद्यपि पौलुस ने शायद यह नहीं सोचा होगा कि निम्न स्तर के काम करने वाले लोग वैसे ही अज्ञानी और सीधे सादे लोग होते थे, शायद जैसे संसार के "ज्ञानवान" मनुष्य, उसने मान लिया होगा कि संसार के ज्ञानवान और परिष्कृत लोगों के पास क्रूस के संदेश के लिये कोई समय नहीं था। संसार के ज्ञान के लिये क्रूस का ज्ञान को समझना बहुत गहरा है। प्रेरित ने कुरिन्थियों को चुनौती दी थी, "अपने चारों ओर देखो" **अपने बुलाए जाने को तो सोचो।**

पौलुस का दावा था कि कुरिन्थ के विश्वासियों के बीच में **शरीर के अनुसार** "बहुत ज्ञानवान नहीं" थे, इसलिये कुरिन्थियों के शुरूवाती मसीहियों के सामाजिक और आर्थिक स्थिति के बारे में प्रश्न उठाए गए हैं। वास्तव में, क्या उनमें से कुछ विद्वान और धनी लोग थे? 1:20 में अलंकारिक प्रश्न यह दर्शाता है कि कोई भी सांसारिक-ज्ञानवान व्यक्ति स्वयं को मसीही नहीं मानते थे। जॉन गेगर सही थे जब उन्होंने लिखा था,

> ... *कुछ* विश्वासी शिक्षित और उनके स्थानीय शहरों और कस्बों की सामाजिक पदानुक्रम में अपेक्षाकृत उच्च स्थानों में पदस्थ होते थे। परन्तु हमें जिस बात की चिन्ता होनी चाहिए, वे थोड़े नहीं, बल्कि अधिकांश लोगों की हो और इस प्रकार आंदोलन का प्रतिक्रिया पूरा का पूरा हो।[11]

पहली सदी में, साम्राज्य के गरीबों और तुच्छ लोगों के मसीह के अनुग्रह और क्षमा के समाचार की ग्रहणशीलता के कारण सुसमाचार बड़े पैमाने पर संसार के चारों ओर फैल गया। ये गरीब और तुच्छ, बदले में वे प्रेरक शक्ति बन गए थे जो घरों और कार्यशालाओं में खमीर की तरह काम करते थे जब तक सारे संसार ने यीशु को, प्रभु के रूप में घोषित होते नहीं सुना।

आयतें 27, 28. कुरिन्थ में अधिकतर आम, गैर-शानदार, गरीब, और तुच्छ लोग अपने आपको उद्धार पाए लोगों में गिनते थे। यह कोई दुर्घटना नहीं थी; यह परमेश्वर का कार्य था। **उसने जगत के मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करे** (1:27)। पौलुस आगे कहता है, **परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को**, चुन लिया है (1:28)। परमेश्वर ने अभिमानी बुद्धि और बलवान के बल के कारण चकित किया। उसने **वरन् जो हैं भी नहीं उनको भी चुन लिया** कि उन्हें जो हैं, व्यर्थ ठहराए। कोई विरोधाभास इतना अधिक गहरा नहीं है कि परमेश्वर ने दीन लोगों को अच्छा, अर्थपूर्ण, और आशा-भरा जीवन दिया है, जबकि संसार की शक्ति ने अनिश्चितता, दुःख और यहाँ तक कि शारीरिक मृत्यु भी सहा है। यीशु ने कहा, विश्वासी जो अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह उस की रक्षा करेगा (यूहन्ना 12:24, 25)। जिनके पास सांसारिक ज्ञान है वे कभी नहीं समझ सकते। "पौलुस ने क्रूस की निर्बलता और शक्तिहीन[ता] को उनकी स्वयं की निर्बलता और शक्तिहीनता से सम्बोधित किया और उन्हें यह संकेत दिया कि ईश्वरीय शक्ति उनकी सामाजिक निर्बलता में काम कर सकती है।"[12]

इसलिए कि परमेश्वर ने शारीरिक रूप से, अपने पुत्र यीशु मसीह के व्यक्ति के रूप में देह धारण किया जो एक विशिष्ट मसीही सिद्धान्त है; यह विश्वास का एक बुनियादी सिद्धान्त है। मसीहियों ने शरीर और आत्मा के किसी भी आसान विभाजन से इनकार कर दिया है। नए नियम के समय में, ज्ञानवानों ने सम्भावना पर ठोकर खाई कि भलाई और पवित्रता देह बननी चाहिए। वे अब भी करते हैं। अगस्टीन ने पोरफीरी और अपुलीयस जैसे दार्शनिकों से पूछा, "ऐसा क्यों है कि आप मसीही होने से इनकार करते हैं?" उन्होंने एक और प्रश्न के उत्तर में कहा:

"क्या ऐसा नहीं है कि मसीह नम्र बनकर आया और आप गर्व करते हो?" अगस्टीन ने आगे कहा, प्लेटो के स्कूल से मसीह के शिष्यत्व में जाना यह, वास्तव में ज्ञानवानों के लिये उनके शान में गिरावट है।[13] मानव परिस्थितियों में अंतर्निहित रहस्यों के बावजूद, शिक्षित पुरुषों का अनुमान लगाया जा रहा है और अपने आपको समझना जारी है।

आयत 29. कुरिन्थियों के लिये सबक यह था: **कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करने पाए।** सामाजिक रूप से श्रेष्ठ और आम भी मानव पाप, असहायता और अज्ञान के अधीन है। कोई भी दावा नहीं कर सकता कि उसने परमेश्वर की संरचना की खोज की है; कोई भी उसके दिमाग को समझ नहीं सकता है। कुरिन्थियों के पास परमेश्वर में घमण्ड करने का कोई आधार नहीं था, जिसने एक उद्धारकर्ता को भेजने की पहल की थी। उसने स्वयं अपने प्रेरितों को संसार में अपने संदेश का प्रचार करने के लिये भेजा था। इन मसीहियों के लिये उद्धार कोई मानव संरचना से नहीं आया था। महिमा अकेले परमेश्वर के लिये था।

घमण्ड लज्जा का उल्टा होता है। न तो एक आवक, मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को संदर्भित करता है; दोनों आदर और सम्मान के बारे में हैं, जो मित्रों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों से मिलता है। यीशु ने लज्जा का अर्थ सचित्र समझाया जब उसने उन लोगों का दृष्टान्त बताया जो एक मेज पर सबसे उत्तम स्थान पाना चाहते थे। उसने चेतावनी दी कि मेजबान कह सकता है, "इस [प्रतिष्ठित] मनुष्य को अपनी जगह दे।" यीशु ने कहा, "और तब तुझे लज्जित होकर सबसे नीची जगह में बैठना पड़े।" (लूका 14:9)। सबसे अच्छी जगह चुनने में, कोई भी घमण्ड के साथ अपने साथी अतिथियों की प्रशंसा और सराहना चाहेगा; आखिरी जगह पर जाने के बाद ही एक ही संगति के लोगों से लज्जित होना पड़ेगा। "लज्जा" के लिये यूनानी शब्द अंग्रेजी शब्दों "अपमान" और "लज्जा" जैसा ही है। पौलुस घमण्ड और लज्जा दोनों के सामाजिक आयामों के बारे में सोच रहा था। क्रूस के बारे में प्रचार करने से कुरिन्थ के मसीहियों के लिये सार्वजनिक सलाह नहीं मिली। मसीह में "कोई भी घमण्ड नहीं कर सकता है।" मसीह के पास आने के लिये पाप और असहायक होने का अंगीकार करना है।

आयत 30. पौलुस और उसके पाठक **मसीह यीशु में** थे, परन्तु इस दावा में घमण्ड करने का कोई अवसर नहीं था। वे **उसके कार्यों** के कारण "मसीह यीशु में" थे। परमेश्वर ने पहल की और उन्हें बचाया। प्रभावी ढंग से तुम (ὑμεῖς, *हुमेईस*) ने संसार के ज्ञान से कुरिन्थियों की तुलना में तेजी से विरोधाभास की। "मसीह यीशु में" होने का अर्थ था कि जो कुछ वे थे उन्हें अपने जी उठे प्रभु के सम्बन्ध में परिभाषित किया गया था: उनका जीवन, समुदाय, आशा और भविष्य उसी में थे। वह आशा और छुटकारा का आधार और स्रोत दोनों है। इसलिये, यीशु **परमेश्वर की ओर से हमारे लिये** ज्ञान ठहरा। पौलुस के लिये, मसीह में होने का अर्थ क्रान्तिकारी परिवर्तन है। सभी निष्ठा, ज्ञान, और स्नेह उसी में केन्द्रित हैं।

"परमेश्वर की ओर से ज्ञान" को **धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा के**

समानान्तर अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अलग अलग अनुवाद इस आयत को अलग-अलग तरह से जोड़ता है। कई अनुवादक मानते हैं कि "परमेश्वर की ओर से ज्ञान" में अन्य अवधारणाओं को भी शामिल किया गया है। इसलिये, उन्होंने आयत का अनुवाद, "जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा किया।" इसके विपरीत पौलुस ने संसार के ज्ञान और मसीह के ज्ञान के बीच अन्तर समझाया और अनुवादक इसका सही अर्थ बताते हैं।

सारांश (1:31)

[31]ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, "जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे।"

आयत 31. प्रेरित ने समापन करते हुए कहा और अपने दार्शनिक ज्ञान और सांसारिक ज्ञान की अस्वीकृति पर ज़ोर देते हुए कुरिन्थियों के मसीहियों से मानवीय आत्म-निर्भरता को अलग हटाने के लिये आग्रह किया। उसने LXX से यिर्मयाह 9:23 को उद्धृत किया, परन्तु अनुकूलन ने भविष्यद्वक्ता की दलील के लिये कोई हिंसा नहीं की। मानव ज्ञान, बल, और प्रतिष्ठा गर्व के लिये कोई कारण नहीं प्रदान करते हैं। मसीही की महिमा एक क्रूस पर चढ़ाया हुआ उद्धारकर्ता में है। पौलुस ने उद्धृत किया, **"जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे"** (देखें यिर्म. 9:23, 24)। नासरत के यीशु में घमण्ड सर्वोच्च विडम्बना है: वंशावली या भाग्य के बिना वह एक चलता फिरता उपदेशक था। यीशु ने संसार की प्रसिद्धि, बल और ज्ञान से इनकार किया; उसके समान होने के लिये, उसकी कलीसिया को भी ऐसा ही करना चाहिए।

अनुप्रयोग

उत्प्रेरणा और संस्मरण (1:14-16)

पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है" (2 तीमु. 3:16)। उसको स्वयं अपनी प्रेरणा का आभास था (1 कुरिं. 2:13)। क्योंकि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, इसलिए मसीही लोग इसके वचनों को अपनी नैतिकता व मसीही सिद्धांत की दिशा निर्देशन के रूप में प्रयोग करते हैं। प्रेरणा और केनन से संबंधित प्रश्न बाइबल के अधिकार क्षेत्र में है। फिर भी, न तो पौलुस और न ही बाइबल के कोई अन्य लेखकों ने उस रहस्यमयी प्रक्रिया का स्पष्टीकरण किया है जिसके द्वारा पवित्र आत्मा ने अपने प्रेरणित दस्तावेज़ों के लिखवाने में लेखकों के मस्तिष्क से कैसे वार्तालाप किया। प्रेरणा अर्थपूर्ण है क्योंकि बाइबल का अधिकार अर्थपूर्ण है।

प्रेरित ने 1:14 में बताया कि उसने क्रिसपुस और गयुस को बपतिस्मा दिया था और तत्पश्चात् उसने यह सुधारा कि उसने स्तिफनुस के घराने को भी

बपतिस्मा दिया था, जो 1:16 में एक और स्मरण में चूक करने की अनुमति देता है। यह इस बात को दर्शाता है कि पवित्र आत्मा ने यूँ ही उसके मस्तिष्क पर कब्ज़ा नहीं किया; कोई भी इस बात पर विवाद नहीं करता है कि पवित्र आत्मा की स्मरण शक्ति में त्रुटि है। पवित्र आत्मा द्वारा पौलुस की प्रेरणा, उसके स्मरण क्षमता, कलीसिया की विशेष आवश्यकता और जिस समाज में वह रहता था उसके सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में कार्यरत था। इन सब बातों का आधुनिक पाठकों के मसीही सिद्धांत और व्यवहार की दिशा निर्देशन के लिए एक महत्वपूर्ण आशय है।

लिखित दस्तावेज़ों में, जिसे हम "1 कुरिंथियों" कहते हैं, को प्रस्तुत करने में पौलुस प्रथम पक्ष के व्यक्ति थे। कुरिंथ में प्रेरित के समकालीन, जो उसके पत्री के प्रथम पाठक थे, दूसरे पक्ष के लोग थे। उसके बाद के पाठक तीसरे पक्ष के वे लोग हैं जिन्होंने न तो कोई पत्री लिखी और न ही उनको सीधे संबोधित कोई पत्री मिली। हमारे संदर्भ में, जो तीसरे पक्ष के पाठक कहलाते हैं, 1 कुरिंथियों से आधिकारिक मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए हमें यह पत्री वैसे ही समझनी होगी जैसे प्रथम पाठकों ने इसे समझा था। तब हमें यह निर्धारित करना होगा कि हमारे संसार और प्रथम पाठकों के संसार में सामान्य क्या है और दोनों संसार एक दूसरे से कैसे भिन्न हैं। जब हम पवित्रशास्त्र से आधिकारिक मार्गदर्शन प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, तो हमें यह समझना होगा कि जिस प्रकार पौलुस के दिनों में कलीसिया में समस्याएं थीं और पौलुस ने उनका संबोधन किया, वैसे ही आज भी कलीसिया के सम्मुख समस्याएं हैं। उदाहरण के लिए, कलीसिया में एकता की समस्या (1:10; 11:18) और अनैतिक व्यवहार (6:9-11) आज भी वैसे ही है, जबकि महिलाओं को सिर ढकने (11:5-16) की समस्या भिन्न है।

कलीसिया और इसकी सार्वजनिक पहचान (1:17)

आज संस्थाएं सार्वजनिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने के लिए लाखों डॉलर खर्च करतीं हैं। पहचान का संबंध प्रत्यक्ष ज्ञान से है न कि अस्तित्व से है। एक कम्पनी लोगों से और अपने कर्मचारियों से तब तक झूठ बोल सकती है जब तक वह अपनी पहचान एक सम्मानीय संस्था के रूप में स्थापित न कर ले। उसी तरह, कुरिंथ की कलीसिया भी अपनी अस्तित्व के बजाय अपनी सार्वजनिक पहचान बनाए रखने में अधिक चिंतित थी। पौलुस उनके ध्यान को परिवर्तित करना चाहता था।

पौलुस के लिए, "शब्दों के ज्ञान" (1:17) और संसार की प्रमाणिकता के अनुसार मापी गई दार्शनिक सम्मान अधिक महत्वपूर्ण नहीं था। वह प्रभु की वर्तमान कलीसिया को यह कह सकता था कि उसके जाने पहचाने सदस्य और वाकपटुक संदेश वाहकों का बहुत थोड़ा महत्व है। सबसे अधिक मायने इस बात से है कि मसीही लोग अपने मन में मन फिराने, उनके जीवन की पवित्रता जो इस बात से प्रकट है कि वे अपने व्यवहारों को कैसे संवारते है, का अनुभव लिए फिरते हैं। परमेश्वर के चिंता का विषय सार्वजनक पहचान नहीं है; वह कलीसिया

का मन जानता है।

क्रूस की कथा (1:21)

KJV में 1:21, इस प्रकार अनुवाद किया गया है "... it pleased God by the foolishness of preaching to save them that believe." NASB में इस आयत का बेहत्तर अनुवाद इन शब्दों में किया गया है "... God was well-pleased through the foolishness of the message preached to save those who believe." हिंदी में इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है, "… परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे।" पौलुस जिस विडंबना को यहाँ प्रकट कर रहा है वह यह है कि संसार ने सुसमाचार प्रचार को मूर्खता नहीं ठहराया है। बल्कि वह सुसमाचार में निहित सामर्थ पर ज़ोर दे रहा है। यीशु ने अपने शिष्यों को संसार में इसलिए भेजा कि वे संसार को क्रूस का प्रचार करने के द्वारा परमेश्वर के पास ले आए (मत्ती 28:19, 20)। महान आदेश, कलीसिया को आगे बढ़ने के लिए अभी भी आदेश जारी करता है।

क्रूस की कथा हमेशा निर्णय लेने के लिए एक बुलाहट है। एक बुद्धिजीवी के रूप में सुसमाचार की बुलाहट का विश्लेषण संसारिक दर्शन की तर्क वितर्क से करें तो इसका आत्मिक मृत्यु ही होगा। परमेश्वर ने यीशु को मानव जाति को छुड़ाने के लिए भेजा। प्रभु ने अपने पिता की इच्छा पूरी की। परमेश्वर के नियुक्त समय पर यीशु वापस आएगा; उस समय तक के लिए, सुसमाचार उद्धार पाए हुओं के हाथों में सौंप दिया गया है। मसीह को प्रचार करना उन लोगों के लिए बुलावा है जो इसे सुनकर प्रभु के पास लौट आने का निर्णय लेते हैं, उनसे निवेदन करता है कि वे सुसमाचार का पालन करें और भक्तिपूर्ण जीवन जीएं। पश्चाताप न करने और आज्ञा न मानने का निर्णय, उसका इनकार करना है।

निर्बल और मूर्ख (1:25)

जब पतरस गतसमनी की बाग में यीशु के शत्रुओं के विरूद्ध तलवार प्रयोग करना चाहता था तो यीशु ने परमेश्वर की राज्य को आगे बढ़ाने के लिए हिंसा की मार्ग को अस्वीकृत किया। उसने कहा, "क्या तू नहीं जानता कि मैं अपने पिता से विनती कर सकता हूँ, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा?" (मत्ती 26:53; देखें यूहन्ना 18:10, 11)। उसके सेवकाई के आरंभ से ही, यीशु ने यह स्पष्ट कर दिया था कि मल्लयुद्ध युद्ध के मैदान से हटकर अलग क्षेत्र में लड़ा जाएगा।

दुष्ट ने उसको सेना और तलवार का प्रयोग करने के लिए विवश किया था। उसने यीशु को ऊँचे पर ले जाकर पृथ्वी की सारी साम्राज्य दिखा दी और उससे कहा, "ये सब मैं तुझे दे सकता हूँ। इसलिए क्रूस पर तुझे दुःख उठाने की आवश्यकता नहीं है" (मत्ती 4:8, 9)। जब भीड़ (अति उत्साही लोग) उसे राजा

बनाना चाहती थी, तो वह वहाँ से जितनी जल्दी हो सका निकल गया (यूहन्ना 6:15)। उद्धारकर्ता ने न तो सेना और न ही धन बल पर हाथ लगाया। उसने अपने भावी अनुयायियों को भौतिक सफलता की अपेक्षा न करने के लिए कहा (मत्ती 8:20)। उन स्त्रियों के बिना जो उसके अनुयायी हो गईं थीं, उसका तंगी और भी भयानक हो सकता था (लूका 8:2, 3)।

जिस प्रकार इस संसार के लोग सामर्थ/बल का आंकलन करते हैं उसको यीशु ने तिरस्कार किया, लेकिन वह स्वयं समर्थहीन नहीं था। उसने आत्मिक पाठ पढ़ाने के लिए युद्ध के मैदान की उपमा प्रयोग किया (देखें लूका 14:31, 32)। उसने अपने शिष्यों के हाथों में सत्य, प्रोत्साहन, तरस, विश्वास और प्रेम का हथियार थमाया। मसीहियों के मल्लयुद्ध का हथियार उस तरह के नहीं है जैसे कि एक महान सेनानायक अपने सिपाहियों को हथियार थमाता है, लेकिन तब भी वे दहला देने वाले हैं (इफि. 6:13-16; 1 थिस्स. 5:8)। मसीह के लोग, अपने प्रभु के अनुकरण करने में, उन बातों में बुद्धि ढूँढ लेते हैं जिसे संसार मूर्खता समझती है। वे उसमें सामर्थ प्राप्त करते हैं जिसे संसार दुर्बल समझता है।

समाप्ति नोट्स

[1]गोर्डन डी फी ने पौलुस व कुरिन्थिस की कलीसिया के बीच मतभेदों को बनाये रखा है, जो की इस पत्र के लिखने का आधारभूत कारण भी थे। तदनुसार वह तर्क देता है कि पौलुस अपनी प्रेरितीय संबोधन के द्वारा अपने अधिकार पर ज़ोर देता है। (गोर्डन डी फी, *द फ़र्स्ट एपीसल टू द कोरिनथियन्स*, द न्यू इन्टरनैशनल कमेण्ट्री ऑन द न्यू टेस्टामेंण्ट [ग्रैण्ड रैपिड्स, मिशिगनः डब्ल्यू एम बी एर्डमैन्स पबलिशिंग कम्पनी, 1987], 28-30.) पौलुस व कुरिन्थि के बीच कुछ बातों में मतभेद प्रत्यक्ष थे, परन्तु पूरे पत्र में कहीं पर भी वे मतभेद पत्र के उद्देश्य को प्रभावित नहीं करते है। [2]LXX, अथवा सेप्टुआजिंट पुराने नियम धर्मग्रंथ क यूनानी अनुवाद को कहते है। [3]विक्टर पॉल फरनिश, *थियोलॉजी एण्ड एथिक्स इन पॉल* (नैशविलै: एबिन्गडन प्रैस, 1968), 155. [4]गलातियों और 1 कुरिन्थियों से अलग, केवल यूहन्ना 1:42 में, पतरस को "कैफ़ा" कहा गया है। "कैफ़ा" पौलुस का पंसदीदा नाम था जो कि प्रेरित होने के लिये था, यद्यपि वह कभी-कभी उसे "पतरस" कहता था। [5]जेर्ड थिसेन, *द सोशल सेटिंग ऑफ पौलाइन क्रिस्चियनिटी: एसेस ऑन कोरिन्थ*, एड. एंड ट्रांस. जॉन एच. शत्ज़ (फिलाडेल्फिया: फोर्ट्रेस प्रेस, 1982), 55. [6]आई. हॉवर्ड मार्शल, *न्यू टेस्टमेंट थियोलॉजी: मेनी विटनेसेस, वन गोसपेल* (डाउनर्स ग्रोव, इल.: इंटरवर्सिटी प्रेस, 2004), 268. [7]अन्तिम शब्द कहने के साथ, पौलुस का उदाहरण LXX में यशायाह 29:14 से है। परमेश्वर का वचन "मैं बुद्धिमानों की बुद्धि को दूर [या व्यर्थ] कर दूँगा" (ἀθετήσω, *अथेटेसो)*, के बदले, LXX कहता है, "मैं छिपा दूँगा …" (κρύψω, *क्रुप्सो)*। [8]लियोन मॉरिस, *द फर्स्ट एपिस्ल्स ऑफ पौल टू द कोरिन्थियन्स*, रेव. एड., द टिन्डेल न्यू टेस्टमेंट कमेंटरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिच.: वाम. बी. ईर्डमंस पब्लिशिंग कं., 1985), 46. [9]ब्रेवर्ड एस. चाइल्ड्स, *बिब्लिकल थियोलॉजी ऑफ द ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टमेंट्स: थियोलॉजिकल रिफ्लेक्शन ऑन द क्रिश्चियन बाइबल* (मिनेयापोलिस: फोर्ट्रेस प्रेस, 1992), 512. [10]ऑरीगेन *अगैंस्ट सेल्सस* 3.55.

[11]जॉन गेगर, "शैल वी मैरी अवर एनीमिज?: सोशियोलॉजी एण्ड द न्यू टैस्टमेंट," *इन्टरप्रिटेशन* 36 (1 जुलाई 1982): 262. [12]ट्रोएल्स एंगबर्ग-पेडेर्सन, "द गोस्पेल एण्ड सोशल प्रैक्टिस एकोर्डिंग टू 1 कोरिन्थियन्स," *न्यू टैस्टमेंट स्टडीज* 33 (ऑक्टोबर 1987): 562. [13]अगस्टीन *सिटी ऑफ गॉड* 10.29.